Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنۡزَلۡتَ وَاتَّبَعۡنَا الرَّسُوۡلَ فَاكۡتُبۡنَا مَعَ الشّٰهِدِيۡنَ ○

(आले इमरान आयत : 54)

अनुवाद: हे हमारे रब्ब हम उस पर ईमान ले आए जो तूने उतारा और हमने रसूल की पैरवी की, अत: हमें सच्चाई की गवाही देने वालों में लिख दे।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّيۡ عَلٰى رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ وَعَلٰى عَبۡدِهِ الۡمَسِيۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

अंक 11

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

14 मार्च 2019 ई. 06 रजब 1440 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह।

अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

यह दुनिया क्या है एक प्रकार का कठिनाइयों का घर है
वही अच्छा है जो हर एक बात गोपनीय रखे और दिखावे से बचे
वह लोग जिनके कर्म अल्लाह के लिए होते हैं वह किसी पर अपने कर्मों को प्रकट नहीं होने देते यही लोग मुत्तकी हैं
उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मुत्तक़ी को हमेशा शैतान के मुकाबले पर जंग करनी पड़ती है लेकिन जब वह नेक हो जाता है तो सब जंगे भी खत्म हो जाती हैं। उदाहरण के तौर पर एक दिखावा ही है जिससे उसे आठों पहर जंग है मुत्तक़ी एक ऐसे मैदान में है जहां हर वक्त लड़ाई है। अल्लाह के फज़ल का हाथ उसके साथ हो तो उसे विजय है जैसे दिखावा जिसकी चाल एक चींटी की तरह है कभी-कभी इंसान बिना समझे लेकिन अवसर पर दिखावे को दिल में पैदा होने का अवसर दे देता है उदाहरण के तौर पर एक का चाकू गुम हो जाए और वह दूसरे से पूछे तो उस मौके पर एक मुत्तक़ी का जंग शैतान से शुरू हो जाता है जो उसे सिखाता है कि इस तरह पूछना एक प्रकार की बेइज्ज़ती है जिससे उसके क्रोधित होने की आशंका है और संभव है कि आपस में लड़ाई भी हो जाए। इस अवसर पर एक मुत्तक़ी को अपने नफ्स की बुरी इच्छा से जंग है। अगर उस व्यक्ति में केवल अल्लाह के लिए ईमानदारी मौजूद हो तो गुस्सा करने की उसको ज़रूरत ही क्या है क्योंकि ईमानदारी जितनी छुपा कर रखी जाए उतनी बेहतर है उदाहरण के तौर पर एक जोहरी को रास्ते में कुछ चोर मिल जाएं और चोर आपस में उसके बारे में मशवरा करें। कुछ उसे दौलतमंद बताएं और कुछ कहें कि वह कंगाल है अब मुक़ाबले के तौर पर यह जोहरी उन्हीं को पसंद करेगा जो उसे कंगाल कहेंगे।

कर्मों में गोपनीयता अच्छी है

यह दुनिया क्या है एक प्रकार का कठिनाइयों का घर है वही अच्छा है जो हर एक बात गोपनीय रखे और दिखावे से बचे वह लोग जिनके कर्म अल्लाह के लिए होते हैं वह किसी पर अपने कर्मों को प्रकट नहीं होने देते यही लोग मुत्तकी हैं

मैंने 'तज़किरतुल औलिया' में देखा है कि एक भीड़ में एक बुज़ुर्ग ने सवाल किया कि उसको कुछ रुपए की आवश्यकता है कोई उसकी मदद करे। एक ने नेक समझकर उसको 1000 रुपए दिया। उन्होंने रुपया लेकर उसकी सखावत और दरियादिली की प्रशंसा की। इस बात पर वह दुखी हुआ कि जब यहां ही तारीफ हो गई तो संभवत: आखिरत के सवाब से महरूम हो गया। थोड़ी देर के बाद आया और कहा कि वह रुपया उसकी मां का था जो देना नहीं चाहती। अत: वह रुपया वापस दिया गया जिस पर हर एक ने लानत की और कहा कि झूठा है असल में रुपया देना नहीं चाहता। जब शाम के समय वह बुज़ुर्ग घर गया तो वह व्यक्ति हज़ार रुपया उसके पास लाया और कहा कि आपने सबके सामने मेरी प्रशंसा करके मुझे आखिरत के सवाब से महरूम कर दिया इसलिए मैंने यह बहाना किया। अब यह रुपया आपका है लेकिन आप किसी के आगे नाम न लें। बुजुर्ग रो पड़ा और कहा कि अब तो कयामत तक लानत का पात्र ठहरा क्योंकि कल की घटना सबको मालूम है और यह किसी को मालूम नहीं कि तूने मुझे रुपया वापस दे दिया है।

एक मुत्तक़ी तो अपनी तामसिक वृत्ति के विरुद्ध जंग करके अपने ख्याल को छुपाता है और गोपनीय रखता है परंतु अल्लाह तआला उस गोपनीयता के विचार को हमेशा प्रकट करता है जैसा कि एक बदमाश कोई बुरा काम करके गोपनीय रहना चाहता है इसी प्रकार एक मुत्तक़ी छुपकर नमाज़ पढ़ता है और डरता है कि कोई उसको देख ले। मुत्तक़ी एक प्रकार की गोपनीयता चाहता है। तक्वा के मर्तबे बहुत हैं लेकिन बहरहाल तक़वा के लिए तकल्लुफ है और मुत्तक़ी निरंतर हालत ए जंग में है और सालेह उस जंग से बाहर है जैसे कि मैंने मिसाल के तौर पर ऊपर दिखावे का वर्णन किया है जिससे मुत्तक़ी को आठों पहर का लड़ना पड़ता है।

दिखावे और तक्वा की जंग

कभी-कभी दिखावा और हिल्म (संयम) की जंग हो जाती है कभी इन्सान का गुस्सा अल्लाह की किताब के विरुद्ध होता है गाली सुन कर उसका नफ्स जोश में आ जाता है। तक्वा उसको सिखाता है कि वह गुस्सा करने से बचे जैसे क़ुरआन कहता है وَاِذَا مَرُّوۡا بِاللَّغۡوِ مَرُّوۡا كِرَامًا (अल फ़ुरक़ान- 73) ऐसा ही बेसब्री के साथ उसे अक्सर जंग करनी पड़ती है। बेसब्री से अभिप्राय यह है कि उसको तकवा की राह में इतनी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है कि मुश्किल से वह अपने परम उद्देश्य को पहुंचता है। इसलिए बेसब्र हो जाता है उदाहरण के तौर पर एक कुआं 50 हाथ तक खोजना है अगर दो चार हाथ के बाद खोदना छोड़ दिया जाए तो केवल यह एक कुधारणा है। अब तक्वा की शर्त यह है कि जो अल्लाह तआला ने हुकुम दिए हैं उनको अंत तक पहुंचाएं और बेसब्र न हो जाए।

राहे सलूक में मुबारक क़दम वाले दो गिरोह हैं

राहे सलूक में मुबारक कदम वाले दो गिरोह हैं एक दीनुल अजाइज़ वाले जो मोटी-मोटी बातों पर कदम मारते हैं उदाहरण के तौर पर शरियत के आदेशों के पाबंद हो गए और निजात पा गए। दूसरे वह जिन्होंने आगे कदम मारा कभी नहीं थके और चलते गए यहां तक कि परम उद्देश्य तक पहुंच

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

गए लेकिन नाकाम वह समूह है कि दीनुल अजाइज़ से तो कदम आगे रखा लेकिन परम उद्देश्य (मंजिलें सलूक को तय न किया। वह जरूर नास्तिक हो जाते हैं जैसे कुछ लोग कहते हैं कि हम तो नमाज़ें भी पढ़ते रहे चिल्ला कसियाँ भी की लेकिन फायदा कुछ न हुआ जैसे एक व्यक्ति मन्सूर मसीह ने बयान किया कि उसके ईसाई होने का कारण यही था कि वह मुर्शिदों के पास गया, जिल्ला कशी करता रहा लेकिन फायदा कुछ न हुआ तो कुधारणा ग्रसित होकर ईसाई हो गया।

सच्चाई और सब्र

जो लोग बेसब्री करते हैं वह शैतान के कब्जा में आ जाते हैं इसलिए मुत्तक़ी को बेसब्री के साथ भी जंग करनी पड़ती है। बोस्तान में एक उपासक का वर्णन किया गया है कि जब कभी वह इबादत करता तो हातिफ यही आवाज़ देता कि तू मरदूद है। एक बार एक मुरीद ने यह आवाज़ सुन ली और कहा कि अब तो फैसला हो गया अब टक्करें मारने से क्या लाभ होगा। वह बहुत रोया और कहा कि मैं इस द्वार को छोड़कर कहां जाऊं अगर लानती हूं तो लानती ही सही सौभाग्य है कि मुझको लानती तो कहा जाता है अभी यह बातें मुरीद से हो ही रही थीं कि आवाज़ आई कि तू मक़बूल है। अत: यह सब सच्चाई और सब्र का परिणाम है जो मुत्तक़ी में होना शर्त है।

(मल्फूज़ात जिल्द प्रथम पृष्ठ 14-16)

पृष्ठ 8 का शेष

तबकात अल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 334, हारिस बिन अनस पृष्ठ 362,अबुल्लाह बिन ज़ुबैर, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेअरूत 1990)

फिर हज़रत हुरयत बिन ज़ैद अंसारी एक सहाबी थे। एक रिवायत में उनका नाम ज़ैद बिन साअलबा भी बयान हुआ है। हज़रत हुर्रियस का संबंध कबीला ख़ज़रज की शाख़ बनु ज़ैद बिन हरिस से था। आप ने अपने भाई हज़रत अब्दुल्लाह के साथ गज़वा ए बदर में शामिल हुए थे। आज़ान के संबंध में स्वप्न दिखाया गया था। आप गज़वा ए अहद में भी शामिल हुए थे।

(असदुल ग़ाबा, भाग 1, पृष्ठ 717 से 718 ,हुर्रियस बिन ज़ैद, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेअरूत 2003) इनके भाइयों को भी अज़ान के शब्दों के बारे में बताया गया था।

फिर जिन सहाबी का वर्णन है उनका नाम है हज़रत हुर्रियस बिन इसम्म: का संबंध अंसार के कबीला बनू नज्जार से था और बेरी माअनुना के दिन यह शहीद हुए थे। (इस्तेयाब, भाग 1 पृष्ठ 292 हारिस बिन अस्मा, प्रकाशित दारुल जलील बेअरूत 1992)

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हारिस और सुहैब बिन सिनान के मध्य मवाखात कायम फ़रमाई थी।

हज़रत हारिस बिन असिम्मा जंग बदर के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रवाना हुए जब अर्रौहा के स्थान पर पहुंचे तो आप में और अधिक सफर करने की शक्ति न रही। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको मदीना वापस भेज दिया लेकिन माले गनीमत में आप का हिस्सा बदर में शामिल होने वालों की तरह नियुक्त फरमाया। अर्थात वह व्यवहारिक रूप से सम्मिलित नहीं हुए थे परंतु एक भावना के अंतर्गत निकले थे लेकिन सेहत ने अनुमति नहीं दी या उस समय ज्यादा बीमार हो गए होंगे इसलिए वापस भिजवा दिए गए लेकिन आपकी नीयत और जज्बे को देखकर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको बदर में सम्मिलित होने वाले सहाबा में शामिल किया। आप उहद की जंग में सम्मिलित थे। उस दिन जब लोग बिखर गए थे तो उस समय हज़रत हारिस साबित कदम रहे। हज़रत हारिस ने आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से मौत पर बैअत की। आपने उस्मान बिन अब्दुल्लाह को कत्ल किया अर्थात हज़रत हारिस ने, और सल्ब ले लिया यानी जो उसका जंगी लिबास और सामान था वह ले लिया। जिसमें उसकी ढाल, खौद और तलवार थी। रसूल सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम ने वह सामान हज़रत हारिस को ही दे दिया। आप को जब उस्मान बिन अब्दुल्लाह की मौत की खबर हुई तो अपने फरमाया समस्त प्रशंसाएं अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने उसे मौत दी। (अत्तबाक़ातुलल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 386)

उस्मान बिन अब्दुल्लाह बड़ा खतरनाक शत्रु था यह एक मुशरिक था और उहद की जंग के दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से पूरे हथियारों से लैस होकर आया था। उहद की जंग के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेही वसल्लम ने पूछा कि मेरे चाचा हम्ज़ा रज़ि के साथ क्या हुआ। हज़रत हारिस उनकी तलाश में निकले जब आपको देर हो गई तो हज़रत अली रवाना हुए और हारिस के पास पहुंचे तो देखा कि हज़रत हमज़ा शहीद हो चुके हैं। दोनों सहाबा ने वापस आकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस शहादत की ख़बर दी।

हज़रत हारिस बयान करते हैं उहद की जंग के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे जब के आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक घाटी में थे फ़रमाया कि क्या तुमने अब्दुल रहमान बिन ऑफ को देखा है मैंने कहा जी हां मैंने उन्हें देखा है वह पहाड़ी के साइड में थे और उन पर मुशरिकीन का लश्कर हमला कर रहा था मैंने उनकी ओर मुंह किया ताकि उनको बचा हूं मगर फिर मेरी नजर आप पर पड़ी और मैं आपके पास आ गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि फरिश्ते उसकी सुरक्षा कर रहे हैं अर्थात अब्दुल रहमान बिन ऑफ की फरिश्ते सुरक्षा कर रहे हैं. एक और रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया के फरिश्ते उसके साथ लड़ रहे हैं हज़रत हारिस रजि अल्लाह अन्हु बयान करते हैं कि मैं अब्दुल रहमान बिना उसके पास गया फिर वापस होकर आ गया जब जंग उनको पहुंची तो मैंने देखा उनके सामने 7 आदमी कत्ल किए हुए पड़े हैं मैंने कहा कि क्या आपने इन सब को कत्ल किया है इस पर अब्दुल रहमान ने कहा कि इन 3 को तो मैंने कत्ल किया है मगर बाकियों के बारे में नहीं जानता कि उनको किसने कत्ल किया है इस पर मैंने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था अर्थात के फरिश्ते उसका साथ दे रहे हैं। (असदुल ग़ाबा जिल्द 1 पृष्ठ 615)

हज़रत हारिस बेरे मऊना की घटना में सम्मिलित हुए। जिस समय यह घटना हुई और सहाबा को शहीद किया गया उस समय हज़रत हारिस और उम्र बिन उमैया ऊंटों को चराने गए थे। सीरत इब्ने हिशाम में दो सहाबी उम्र बिन उमय्या और मुन्ज़िर बिन मुहम्मद का नाम दर्ज है। अत: कुछ किताबों की रिवायत में है यह थे जो ऊंटों को चराने वाले थे। अत: इस रिवायत के अनुसार जो यह कहती है कि यह थे जब वापसी पर यह अपने पड़ाव की जगह पर पहुंचे तो देखा कि पक्षी वहां बैठे हुए हैं तो उन्होंने समझ लिया कि उनके साथी शहीद हो चुके हैं। हज़रत हारिस ने हज़रत उम्र से कहा आपकी क्या राय है? अमर ने कहा कि मेरा विचार तो यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वाले वसल्लम के पास चला जाए और वापस जाकर खबर की जाए। हज़रत हारिस ने कहा कि मैं इस जगह से पीछे नहीं रहूंगा जहां मुन्ज़िर को कत्ल किया गया है। अत: आप आगे बढ़े और लड़ते हुए शहीद हो गए। (असदुल गाबा जिल्द 1 पृष्ठ 615)

अल्लाह तआला इन बद्री साहाबा के दर्जे बुलंद से बुलंद फरमाता चला जाए। आमीन

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी इस मस्जिद (मस्जिद नबवी) में एक नमाज़ अन्य मस्जिदों की हज़ार नमाज़ों से बेहतर है सिवाए काबा के

सहाबा की जीवनी का वर्णन होता है, कुछ विषय भी साथ-साथ हल हो जाते हैं

आज्ञापालन और वफ़ादारी के पैकर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बद्री सहाबा हज़रत अबू मुलैल अल अज़अर, हज़रत अनस बिन मआज़ अंसारी, हज़रत अबू शैख़ उबै बिन साबित, हज़रत अबू बुर्दा बिन नियार, हज़रत असअद बिन ज़ैद, हज़रत तुमैम बिन ययार अंसारी, हज़रत ऑस बिन साबित बिन मुन्ज़िर, हज़रत साबित बिन खन्सा, हज़रत ऑस बिन अस्सामित, हज़रत अरक़म बिन अबी अरक़म, हज़रत बसबस बिन अम्र, हज़रत सअलबा बिन गनमा, हज़रत जाबिर बिन खालिद, हज़रत हारिस बिन नुमान बिन उमय्या अंसारी, हज़रत हारिस बिन अनस अंसारी, हज़रत हुरैस बिन ज़ैद अंसारी, हज़रत हारिस बिन असिम्मा रज़ियाल्लाह अन्हुम की पवित्र जीवनी का मन मोहक वर्णन

अल्लाह तआला इन बद्री साहाबा के दर्जे बुलंद से बुलंद फरमाता चला जाए

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 08 फरवरी 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज मैं जिन सहाबा रज़ि. का वर्णन करूँगा उनमें से पहला नाम हज़रत अबू मुलैल इब्नि अल अज़अर का है. उनकी माँ का नाम उम्मे अम्र बिन्त अशरफ़ था। अन्सार के क़बीले से सम्बन्ध रखते थे। उनको बदर और ओहद के युद्ध में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

(अल तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3- पृष्ठ 353)

एक रिवायत के अनुसार उनके भाई हज़रत अबू हबीब बिन अज़अर भी बदर और दूसरे युद्धों में शामिल हुए थे।

(असदुल ग़ाब: जिल्द - 6 पृष्ठ - 65)

दूसरा वर्णन हज़रत अनस बिन मुआज़ अन्सारी का है। कुछ रिवायतों में उनका नाम उनैस भी बयान हुआ है। उनका सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख बनू नज्जार से था। उनकी माँ का नाम उम्मे उनास बिन्त ख़ालिद था। वह बदर, ओहद सहित समस्त इस्लामी युद्धों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ शामिल रहे। ओहद के युद्द में उनके भाई हज़रत उबय बिन मुआज़ भी उनके साथ शामिल थे। उनकी मृत्यु के बारे में मतभेद है। एक रिवायत में है कि उनकी मृत्यु हज़रत उस्मान रज़ि. के ख़िलाफ़तकाल में हुई। जबकि दूसरी रिवायत में है कि हज़रत अनस् बिन मुआज़ और उनके भाई हज़रत उबय बिन मुआज़ बेरे मऊना की घटना में शहीद हो गए थे।

(अल तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3- पृष्ठ 381-)

अगला वर्णन हज़रत अबू शेख़ उबय बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो का है हज़रत उबय बिन साबित का सम्बन्ध ख़ज़रज क़बीले की शाख़ बनू अदी से था। उनका लक़ब(उपाधि) अबू शेख़ था। एक वर्णन के अनुसार यह लक़ब उनके बेटे का था। उनकी माँ का नाम सुख़्ता बिन्त हारिसा था। हज़रत उबय बिन साबित हज़रत हस्सान बिन साबित और हज़रत औस बिन साबित के भाई थे। वह बदर और ओहद के युद्ध में शामिल हुए और उनकी मृत्यु बेरे मऊना की घटना के दिन हुई।

इस बारे में मतभेद है कि हज़रत उबय बिन साबित बदर के युद्ध में शामिल हुए थे या नहीं। इब्नि इस्हाक़ कहते हैं कि हज़रत उबय बिन साबित ज़माना-ए-जाहिलियत में ही मृत्यु पा गए थे और जो बदर और ओहद के युद्ध में शामिल हुए थे वह उनके बेटे अबू शेख़ बिन उबय बिन साबित थे। जबकि अल्लामा इब्नि हश्शाम ने बदर के युद्ध में शामिल होने वालों में अबू शेख़ उबय बिन साबित को रखा है। हज़रत उबय बिन साबित की मृत्यु के बारे में कुछ रिवायतों में लिखा है कि वह बेरे मऊना की घटना के दिन मृत्यु पाए और कुछ में लिखा है कि ओहद युद्ध के दिन उनकी मृत्यु हुई। बहरहाल रिवायतों से यह भी पता चलता है कि जो सहाबी ओहद के दिन शहीद हुए वह हज़रत अबू शेख़ उबय बिन साबित नहीं थे बल्कि उनके भाई हज़रत औस बिन साबित रज़ि.थे।

(अल तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3- पृ. 382)

अगला वर्णन हज़रत अबू बुर्दा बिन नियार का है। उनकी उपाधि अबू बुर्दा थी। वह अपनी उपाधि से मशहूर थे। उनका असल नाम हानी था। एक रिवायत में उनका नाम हारिस और दूसरी में मालिक भी बयान हुआ है। उनका सम्बन्ध क़बीला बनू क़ुज़ाअः के ख़ानदान बली से था। हज़रत अबू बुर्दा हज़रत बराअ बिन आज़िब के मामू थे। एक और रिवायत में आता है कि हज़रत अबू बुर्दा हज़रत बराअ बिन आज़िब के चाचा थे। बैअत अक़्बा सानिया में शामिल हुए। इसके अलावा बदर, ओहद और ख़न्दक़ समेत सारी लड़ाइयों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ रहे। फतह मक्का के दिन हारिसा क़बीले का झण्डा हज़रत बुर्दा के पास था। (अल तबक़ातुल कुबरा जिल्द-3 पृ. 344)

हज़रत अबू अबस और हज़रत अबू बुर्दा ने जब इस्लाम क़बूल किया तो उस समय दोनों ने क़बीला बनू हारिसा की मूर्तियों को तोड़ा। (अल तबक़ातुल कुबरा जिल्द-3 पृ. 343)

अर्थात् जो मूर्तियाँ उनके क़बीले में थीं उनको तोड़ा था। हज़रत अबू ओमामा से वर्णित है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बदर की लड़ाई के लिए निकलने लगे तो हज़रत अबू ओमामा भी आपके साथ

चलने को तैयार हो गए। इस पर उनके मामू हज़रत अबू बुर्दा बिन नियार ने कहा कि तुम अपनी माँ की देखभाल के लिए रुक जाओ, क्योंकि वह बीमार है। इस्लाम के ख़िलाफ़ हमला होते देखकर उनका दिल जोश मार रहा था कि मैं भी जाऊँ। अत: उन्होंने अपने मामू अबू बुर्दा बिन नियार से कहा कि वह आपकी भी बहन हैं। मेरी जगह आप ही रुक जाएँ। जब यह बात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने पेश हुई तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू ओमामा को माँ की देखभाल के लिए रुकने को कहा और हज़रत अबू बुर्दा लड़ाई के लिए लश्कर के साथ गए। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम युद्ध से वापिस लौटे तो हज़रत अबू ओमामा की माँ का देहान्त हो चुका था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी। (असदुल ग़ाब: जिल्द-6 पृ. 15)

ओहद के युद्ध में मुसलमानों के पास 02 घोड़े थे। एक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास था जिसका नाम अस्सकब था और दूसरा हज़रत अबू बुर्दा के पास था जिसका नाम मुलाविह था। (अल तबक़ातुल कुबरा जिल्द-1 पृ. 380)

हज़रत अबू बुर्दा बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकुछ क़बीलों के पास गए और उनके लिए दुआ की और एक क़बीले को छोड़ दिया उसके पास नहीं गए। इस पर यह बात उस क़बीले वालों को बहुत बुरी लगी और सोचने लगे कि इसका क्या कारण है। इस पर उन्होंने अपने एक साथी के सामान की तलाशी ली तो उसकी चादर में से एक हार निकला जो उसने चोरी करके ले लिया था। फिर उन लोगों ने वह हार वापिस किया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके पास आए और उन लोगों के लिए दुआ की। (अलमोअजमुल कबीर लित्तिबरानी जिल्द-22 पृ. 195)

हज़रत अबू बुर्दा हज़रत अली के साथ सारी लड़ाइयों में शामिल रहे। उनकी मृत्यु हज़रत मुआविय: के प्रारम्भिक शासनकाल में हुई। उनकी मृत्यु के बारे में मतभेद पाया जाता है। एक रिवायत के अनुसार उनकी मृत्यु 41 हिजरी में हुई जबकि दूसरी रिवायतों में 42 और 45 हिजरी का भी वर्णन मिलता है। (असाब: जिल्द- 7 पृ. 32)

हज़रत बराअ इब्नि आज़िब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ईदुल अज़्हा के दिन नमाज़ के बाद हमें संबोधित करते हुए फ़रमाया कि जिसने हमारी नमाज़ जैसी नमाज़ पढ़ी और हमारी क़ुर्बानी की तरह क़ुर्बानी की तो उसने ठीक क़ुर्बानी की और जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी कर ली तो वह बकरी केवल गोश्त ही के लिए हुई अर्थात् यह क़ुर्बानी नहीं है। बल्कि ईद की नमाज़ से पहले क़ुर्बानी करना इसी तरह है जैसे कि गोश्त खाने के लिए बकरी ज़िबह कर ली। इस पर हज़रत अबू बुर्दा नियार उठे और कहा, हे अल्लाह के रसूल * मैंने तो नमाज़ के निकलने से पहले ही क़ुर्बानी कर ली है और मैं यह समझता था कि आज का दिन खाने पीने का है। इसलिए मैंने जल्दी की, ख़ुद भी खाया और अपने घर वालों और पड़ोसियों को भी खिलाया। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह बकरी तो गोश्त ही के लिए हुई। यह तुम्हारी क़ुर्बानी नहीं है। इस पर हज़रत अबू बुर्दा ने कहा कि मेरे पास एक साल की दो पठ्ठियाँ अर्थात् बकरी के दो मादा बच्चे हैं और वे गोश्त की दो बकरियों से अच्छी हैं अर्थात् यह कि अच्छी पली हुई हैं यद्यपि एक साल की हैं लेकिन दो बकरियों की अपेक्षा ज़्यादा अच्छी और मोटी ताज़ी हैं। यदि मैं इनकी क़ुर्बानी कर दूँ तो क्या मेरी ओर से काफ़ी होगा "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हाँ कर दो। लेकिन तुम्हारे बाद यह आदेश और किसी के लिए काफ़ी न होगा अर्थात् किसी और को अनुमति न होगी। " (सही बुख़ारी किताबुल ईदैन बाब कलाम अल-इमाम वन्नास फ़ी ख़ुत्बतिल ईद....हदीस नं. 983)

दूसरी हदीसें भी यही बताती हैं कि ईद के बाद क़ुर्बानी की जाय और दूसरी बात यह कि बकरी की क़ुर्बानी की एक आयु होती है। क़ुर्बानी के समय इसका ध्यान रखना चाहिए। बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो यह फ़रमाया कि तुम्हारे बाद किसी को काफ़ी नहीं है। इस बारे में एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मज्लिस में किसी ने यह सवाल किया कि क़ुर्बानी के बकरे की क्या उम्र होनी चाहिए तो इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत हाफ़िज़ हकीम मौलवी नूरुद्दीन रज़ि. को जो वहाँ बैठे हुए थे फ़रमाया कि आप इसका जवाब दें, तो उन्होंने कहा कि अहले हदीस के निकट क़ुर्बानी का बकरा दो साल का होना अनिवार्य है।

(मलफ़ूज़ात से उद्धृत जिल्द-10 पृ. 100)

हमारे देशों में यह रिवाज है कि लोग कहते हैं दो दाँत का होना ज़रूरी है। सामने के दो बड़े दाँत निकले होने चाहिएँ। बहरहाल उस समय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बुर्दा को जो यह फ़रमाया कि तुम्हें तो मैं इस समय इन एक साल की पठ्ठी बकरियों की क़ुर्बानी करने की आज्ञा देता हूँ लेकिन भविष्य में यह और किसी के लिए नहीं है। बल्कि बकरी या बकरा जवान होना चाहिए और यही ढंग जमाअत में प्रचलित है और यही हमारे फ़त्वे में है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यही बयान फ़रमाया है।

फिर हज़रत अस्अद बिन यज़ीद का वर्णन है उनके पिता का नाम यज़ीद बिन फ़ाकेह था और उनका सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़जरज की शाख बनू ज़ुरीक़ से था। आप बदर और ओहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ शामिल थे। अल्लामा इब्नि इस्हाक़ ने अस्अद के बजाय सअद बिन यज़ीद का नाम अस्हाब-ए-बदर में लिखा है। हज़रत अस्अद बिन यज़ीद के नाम के बारे में भिन्न-भिन्न विचार हैं। कुछ ने उनका नाम सअद बिन ज़ैद कुछ ने सईद बिन फ़ाकेह और कुछ ने सअद बिन यज़ीद बयान किया है।

(अल तबक़ातुल कुबरा जिल्द-3 पृ. 445)

फिर एक बदरी सहाबी हज़रत तमीम बिन यआर अन्सारी रज़ि. थे। हज़रत तमीम के पिता का नाम यआर था। आपका सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख बनू जिदार: बिन औफ़ बिन अल-हारिस से था। वह बदर और ओहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ शामिल थे। हज़रत तमीम की औलाद में बेटा रिब्अी और बेटी जमीला थीं। उनकी माँ क़बीला बनू अम्र से थीं। (अल तबक़ातुल कुबरा जिल्द-3 पृ. 407)

फिर जिन सहाबी का वर्णन है उनका नाम हज़रत औस बिन साबित मुन्ज़िर है यह भी अन्सारी थे। उनका लक़ब अबू शद्दाद था। हज़रत औस के पिता का नाम साबित था। उनकी माँ का नाम सुख़्ता बिन्त हारिस था। आप मशहूर सहाबी हज़रत शद्दाद बिन औस के पिता थे। उनका सम्बन्ध अन्सार के क़बीला बनू अम्र बिन मालिक बिन नज्जार से था। उन्होंने बैअत अक़बा सानिया में इस्लाम क़ुबूल किया था। बदर और ओहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ शामिल थे। हज़रत हस्सान बिन साबित (जो प्रसिद्ध इस्लामी कवि थे) और हज़रत उबय बिन साबित आपके भाई थे। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि. जब मदीना हिजरत करके आए तो इनके यहाँ ही ठहरे थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि. और हज़रत औस बिन साबित के बीच भाई-भाई का रिश्ता क़ायम किया। उनकी मृत्यु के बारे में अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उमारा अन्सारी कहते हैं कि वे ओहद की लड़ाई में शहीद हो गए थे। कुछ दूसरे इसमें मतभेद भी करते हैं लेकिन जो मतभेद करने वाले हैं वे कमज़ोर वर्णनकर्ता हैं।

(अल तबक़ातुल कुबरा जिल्द-3 पृ.382)

फिर जिन सहाबी का वर्णन है उनका नाम हज़रत साबित बिन ख़न्साअ है। उनका सम्बन्ध क़बीला बनू ग़नम बिन अदी बिन नज्जार से था और उन्हें बदर की लड़ाई में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनके बारे में इतना ही ज्ञात हुआ है। (अल तबक़ातुल कुबरा जिल्द-3 पृ.389)

फिर जिन सहाबी का वर्णन है वह हज़रत औस बिन अल सामित हैं। जो बदर की लड़ाई में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ शामिल थे। हज़रत औस बिन सामित हज़रत ओबादा बिन सामित रज़ि. के भाई थे। हज़रत औस बदर और ओहद और दूसरे तमाम युद्धों में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ शामिल रहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत औस बिन सामित और हज़रत मरसद बिन अबी मरसद अलग़नवी के बीच भाई-भाई का रिश्ता क़ायम किया। रिवायतों में आता है कि हज़रत ऑस ने अपनी पत्नी खुवैला बिन मालिक से ज़िहार किया था। (असाबा जिल्द 1 पृष्ठ 673) (अत्त्बकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 413)

ज़िहार कहते हैं कि अरबों में यह रिवाज था कि अपनी पत्नी को मां कह दिया या बहन कह दिया करते थे ऐसा कहने के बाद उसे अपनी पत्नी नहीं समझते थे और उसे संबंध स्थापित करना अपने ऊपर हराम ठहरा लेते थे अर्थात यह कि तुम मेरी मां हो गई हो इसलिए हराम हो गई हो। इस्लाम ने इस रस्म को मिटा दिया और आदेश दिया कि इस शब्द के कहने से तलाक नहीं होती. मां बहन कह दिया तो तलाक नहीं हो जाती, हां यह अभद्र बात है जिसकी सजा इस्लाम ने कफ्फारा मुकर्रर किया है। हज़रत ऑस ने कफ्फारा नहीं अदा किया, कफ्फारा देने से पहले अपनी पत्नी से संबंध स्थापित कर लिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया कि यह गलत है 15 साअ जौ गरीबों को खिलाए अर्थात कफ्फारा यह है कि साठ गरीबों को तुम खाना खिलाओ। ज़िहार के बारे में कुरआन करीम में भी आदेश है अल्लाह ताला फरमाता है कि-

اَلَّذِيۡنَ يُظٰهِرُوۡنَ مِنۡكُمۡ مِّنۡ نِّسَآئِهِمۡ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمۡ ؕ اِنۡ اُمَّهٰتُهُمۡ اِلَّا الّٰٓئِىۡ وَلَدۡنَهُمۡ ؕ وَاِنَّهُمۡ لَيَقُوۡلُوۡنَ مُنۡكَرًا مِّنَ الۡقَوۡلِ وَزُوۡرًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوۡرٌ ﴿۳﴾ وَالَّذِيۡنَ يُظٰهِرُوۡنَ مِنۡ نِّسَآئِهِمۡ ثُمَّ يَعُوۡدُوۡنَ لِمَا قَالُوۡا فَتَحۡرِيۡرُ رَقَبَةٍ مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمۡ تُوۡعَظُوۡنَ بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ ﴿۴﴾ فَمَنۡ لَّمۡ يَجِدۡ فَصِيَامُ شَهۡرَيۡنِ مُتَتَابِعَيۡنِ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنۡ لَّمۡ يَسۡتَطِعۡ فَاِطۡعَامُ سِتِّيۡنَ مِسۡكِيۡنًا ؕ ذٰلِكَ لِتُؤۡمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ ؕ وَتِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ ؕ وَلِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۵﴾

(अल मुजादला 3-5) अर्थात तुम ऐसे जो लोग अपनी बीवियों को मां कह देते हैं वह उनकी मां नहीं हो सकती उनकी माँएं तो वही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया और निसंदेह एक सख्त अप्रिय बात और झूठी बात कहते हैं और अल्लाह तआला निसंदेह बहुत अनदेखी करने वाला और बहुत माफ करने वाला है। और वह लोग जो अपनी बीवियों को मां कह देते हैं फिर जो कहते हैं उस से पलट जाते हैं अर्थात पहले मां कह दिया और फिर कह दिया ओह गलती हो गई तो इसके पहले कि दोनों एक दूसरे को छुएं एक गुलाम का आज़ाद करना है अर्थात उस ज़माने में तो गुलाम होते थे एक गुलाम को आज़ाद करो। अल्लाह तआला फरमाता है यह वह है जिसकी तुम्हें नसीहत की जाती है और जो तुम करते हो अल्लाह उससे हमेशा परिचित रहता है। अत: जो उसका सामर्थ्य न रखते हों अगर यह ताकत नहीं है कि गुलाम को आज़ाद करना है तो निरंतर 2 महीने के रोज़े रखने हैं इससे पहले कि वह दोनों एक दूसरे को छुएँ। अत: जो इसकी भी ताकत न रखता हो तो 60 ग़रीबों को खाना खिलाए। यह उसके लिए है कि तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से तमानियत नसीब हो। यह अल्लाह की सीमाएं हैं और काफिरों के लिए बहुत ही दर्दनाक अज़ाब मुकद्दर है। इस का अनुवाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया है :

"जो व्यक्ति अपनी औरत को मां कहे तो वह वास्तव में इसकी मां नहीं हो सकती। उनकी माएं वही हैं जिन से वह पैदा हुए। तो यह इनकी बात मूर्खतापूर्ण तथा बिलकुल झूठ है और ख़ुदा क्षमा करने वाला तथा बख्शने वाला है और जो लोग मां कह बैठे और फिर दोबारा वापिस लौटना चाहें तो अपनी औरत को छूने से पहले एक गर्दन को आज़ाद करें। यही बहुत जानने वाले ख़ुदा का आदेश है, और अगर गर्दन को मुक्त नहीं कर सकें तो अपनी औरत को छूने से पहले दो महीने रोज़े रखें, और यदि रोज़े नहीं रख सकते हैं, तो साठ ग़रीब लोगों को भोजन कराएं। "(आर्य धर्म, रूहानी खज़ाइन जिल्द 10, पृष्ठ 50)

उनकी पत्नी हज़रत खुवेला बिन साअल्बा से रिवायत है, कि मेरे पति ओस बिन सामित ने मुझ से ज़िहार किया तो मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास शिकायत ले कर गई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे इसके बारे में फरमा रहे थे कि अल्लाह का तक़वा धारण कर। वह तेरा चाचा ज़ात भाई भी है। मैं अपनी बात पर अडिग रही यहाँ तक कि कुरआन की यह आयत नाज़िल हुई। उन्होंने कहा मां किस प्रकार हो सकती है। वह तेरा चाचा ज़ाद भाई भी है और तुम उसकी बीवी भी हो। कहती हैं मैं इस बात पर अडिग रही यहाँ तक कि कुरआन की यह आयत नाज़िल हुई कि -

قَدۡ سَمِعَ اللّٰهُ قَوۡلَ الَّتِىۡ تُجَادِلُكَ فِىۡ زَوۡجِهَا-

(अलमुजादिला-2) कि अल्लाह ने इस औरत की बात सुन ली जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अपने पति के बारे में झगड़ रही थी।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह अर्थात तेरा पति एक ग़ुलाम आज़ाद करे। अब इसकी सज़ा यह है जो आयत में वर्णन हुई जिस प्रकार कुरआने करीम का आदेश है। इसके बाद सारी तफ़सील है जो पहले वर्णन हो चुकी है कि एक ग़ुलाम को आज़ाद करो। कहती हैं मैंने इस पर कहा कि इसमें इतनी शक्ति नहीं। कहाँ से ले ? वह तो ग़रीब आदमी है। आप स.अ.व ने फ़रमाया फिर दो महीने के लगातार रोज़े रखे। मैंने कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! इसकी आयु ऐसी है कि वह निरंतर रोज़े भी नहीं रख सकता। इसकी इसमें शक्ति नहीं है तो आप स.अ.व ने फ़रमाया फिर वह साठ ग़रीबों को भोजन करवाए। इस पर मैंने कहा कि इसके पास तो धन भी नहीं है। उसके पास कुछ नहीं है जिस से वह सदका दे। खुवेला कहती हैं मैं बैठी हुई थी कि तभी उस समय खजूर का एक थैला आया, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में किसी ने प्रस्तुत किया तो मैंने कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! मैं खजूरों के दुसरे थैलों के साथ उसकी सहायता करूंगी अर्थात यदि यह मुझे मिल जाए तो एक और थैले का प्रबंध हो सकता है। आप स.अ.व ने फ़रमाया ठीक है। जा इसको लेजा। यह थैला ले जाओ और इसमें उसकी ओर से साठ ग़रीबों को खिलाओ और फिर अपने चाचा के बेटे के पास जाओ। (सुन्न अबी दाउद किताबुत्तलाक बाब फ़ीज्ज़िहारे हदीस 2214)

हज़रत इब्ने अब्बास का वर्णन है कि सब से पहला ज़िहार जो इस्लाम में हुआ अर्थात पत्नी को मां कहने का वह यही हज़रत ओस बिन सामित का था। उनके निकाह में उनके चाचा की बेटी थीं उन से उन्होंने ज़िहार किया था

। (उसुदुल गाबा जिल्द -1, पृष्ठ-323 ओस बिन सामित, प्रकाशित दारुल क़ुतुबुलइल्मिया बेरूत 2003 ई०)

अत: अल्लाह तआला ने यह सीमाएं स्थापित की हैं तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग में भी यह मामला प्रस्तुत हुआ। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इसका यही दंड है। ख़लीफ़ा[रज़ि०] के युग में इसी प्रकार का मामला हुआ आप[रज़ि०] ने फ़रमाया यही दंड है और केवल इसके कि कोई बहुत ही ग़रीब है तथा शक्ति नहीं है तो फिर वह ख़ुदा से क्षमा चाहे तथा जितनी शक्ति है, पहुँच है वह इस के दंड में दे। अत: अल्लाह तआला ने पत्नी को मां अथवा बहन कहने के लिए सीमाएं निर्धारित की हैं। कइयों को आदत होती है हर छोटी सी बात पर लडाईयां हुईं तो कह दिया कि मेरे पर हराम हो गई अथवा यह हो गया तो तुम मेरी मां के समान हो तुम अमुक हो अथवा क़सम खा ली। तो यह सब किस्में हैं तथा इन पर सीमाएं निर्धारित होती हैं। यदि कोई यह कहता हैं तो उसको

यह दंड है जो अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि गुलाम को आज़ाद करदो या रोज़े रखो या ग़रीबों को खाना खिलाओ।

हज़रत ओस बिन सामत रज़ी कवी भी थे। हज़रत ओस बिन सामत और शद्दाद बिन ओस बिन अंसारी बैतुल मुक़द्दस में ठहरे।

उन की मृत्यु फलिस्तीन की धरती के स्थान पर रमला में 34 हिजरी में हुई। उस समय हज़रत ओस की आयु 72 वर्ष थी।

(असदुल-ग़ाबा भाग 1 पृष्ठ 323, ओस बिन सामत, प्रकाशित दारुल-क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2003)

फिर जिन सहाबी का वर्णन है उनका नाम हज़रत अरकम बिन अबी अरकम है। उनका उपनाम अबू अब्दुल्ला था। हज़रत अरकम की माता का नाम उमेमा पुत्री हारिस था। कुछ रिवायतों मे उनका नाम तुमाज़िर पुत्री हुज़ायेफा और सफिय्या पुत्री हारिस भी आता है।

हज़रत अरकम का संबंध कबीला बनू मखज़ूम से था। आप इस्लाम स्वीकार करने वाले पहले सहाबा में से थे। कुछ के निकट जब आप ईमान लाए तो आपसे पूर्ण ग्यारह लोग इस्लाम स्वीकार कर चुके थे। कुछ कहते हैं कि आप ने सातवें नंबर पर इस्लाम स्वीकार किया। हज़रत उरवाह बिन ज़ुबैर रिवायत करते हैं कि हज़रत अरकम, हज़रत अबू उबेदा बिन जर्राह और हज़रत उस्मान बिन मजऊन एक साथ एक ही समय में ईमान लाए। हज़रत अरकम का एक घर मक्का से बाहर सफा के पहाड़ के पास था जो इतिहास में दारे-अरक़म के नाम से प्रसिद्ध है दारे-अरक़म उनका घर था उस घर में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस्लाम स्वीकार करने वाले लोग इबादत किया करते थे। यहीं पर हज़रत उमर ने इस्लाम स्वीकार किया था उनके इस्लाम स्वीकार करने के बाद अर्थात हज़रत उमर के इस्लाम स्वीकार करने के बाद मुसलमानों की संख्या 40 हो गई थी और वह घर से बाहर निकले थे यह घर हज़रत अरकम की मिल्कियत मे रहा। फिर आप के पोतो ने यह घर अबू जाफर मंसूर को बेच दिया।

(असदुल ग़ाबा, भाग 1, पृष्ठ187, अरकम बिन अबी अल-अर्कम, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2003) , (असाबा, भाग 1, पृष्ठ 197, अरकम बिन अबी अल-अर्कम, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 1995), (मुस्तद्रिक अली अस्सहिहैन, भाग3, पृष्ठ574, हदीस 6127, किताब मारफ्तुल सहाबा ज़िक्र अरकम बिन अबी अल-अर्कम प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2002)

इसके बारे में सीरत खातामुन नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने लिखा है विस्तार यह है कि इस्लाम के पहले तबलीग़ के मरकज़ अर्थात दारे अरकम के बारे में आपे लिखते हैं कि :

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह ख्याल पैदा हुआ कि मक्का में एक तबलीग़ का मरकज़ स्थापित किया जाए जहां मुसलमान नामाज़ के लिए भी बिना किसी रोक-टोक एकत्र हो सकें और शांति और सुकून और खामोशी के साथ इस्लाम की तबलीग़ की जा सके। इस उद्देश्य के लिए एसे घर की आवश्यकता थी जो मरकज़ की हैसियत रखता हो। इसीलिए आपने एक नए मुस्लिम अरकम बिन अबी अल-अर्कम के घर को पसंद फ़रमाया जो कि सफा के पहाड़ के दामन में स्थापित था। इसके पश्चात समस्त मुसलमान यही एकत्र हो गए, यही नमाज़ पढ़ते, यहीं पर सच्चाई को ढूंढने वाले आते, अर्थात जिनको दीन की तलाश थी और इस्लाम का पैग़ाम सुनते थे वह सुनने के लिए और समझने के लिए आते थे या आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संगति से लाभान्वित होने के लिए आते थे, और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन को तबलीग फ़रमाते थे। इसी कारण से यह घर इतिहास में विशेष प्रसिद्धि रखता है और दारुल इस्लाम के नाम से प्रसिद्ध है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने करीबन 3 वर्ष तक दारे अरकम में काम किया अर्थात अवतरण के चोथे वर्ष आप ने अपना मरकज़ बनाया और 6 वर्ष के अंत तक आप ने इस में अपना काम किया।" आप ने इस मिशन को जारी रखा और इतिहासकार लिखते हैं कि दारे अरकम में इस्लाम लाने वालों में अंतिम व्यक्ति हज़रत उमर थे जिनके इस्लाम लाने से मुसलमानों को बहुत ताकत मिली थी और वह दारे अरकम से निकल कर बरमला तब्लीग़ करने लग गए।"

(सीरत खातामुनाबिय्यन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए पृष्ठ 129)

मदीना हिजरत के पश्चात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अरकम रजि अल्लाह की मवाखात हज़रत अबू तल्हा ज़ेद बिन सहल के साथ कायम फ़रमाई।

(अल-तबकात अल-कुबरा भाग 3, पृष्ठ 185, अरकम बिन अबी अल-अर्कम, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 1990)

हज़रत अर्कम ग़जवा-ए-बदर में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के माले गनीमत में से एक तलवार उन्हें दी थी। हज़त अर्कम ग़जवा-ए-बदर, अहद के साथ समस्त ग़जवात में शामिल हुए और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपे को मदीना में एक घर भी दिया था। एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें सद्कात की वसूली के लिए निर्धारित करके भिजवाया था।

(असदुल ग़ाबा, भाग 1, पृष्ठ198, अरकम बिन अबी अल-अर्कम, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2003), (असाबा, भाग 1, पृष्ठ187, अरकम बिन अबी अल-अर्कम, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 1995)

इतिहास में यह भी है कि हज़रत अर्कम समझोता हल्फिल फुज़ूल में भी शामिल थे।

(इस्तेयाब भाग1, पृष्ठ 131, अरकम बिन अबी अल-अर्कम, प्रकाशित दारूल जलील बेरुत 1992)

वह समझौता जो ग़रीबों की सहायता करने के लिए इस्लाम से पहले मक्का के रहने वाले बड़े लोगों ने किया था जिसमें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शामिल थे। हज़रत अर्कम के पुत्र उस्मान बिन अर्कम रिवायत करते हैं कि मेरे पिता की मृत्यु 53 हिजरी में हुई। उस समय आप की आयु

83 वर्ष थी। कुछ लोग कहते हैं कि उनकी 55 हिजरी में मृत्यु हुई। उमर के बारे में मतभेद है कि 80 वर्ष थी या इससे कुछ ऊपर थी। हज़रत अर्कम ने वसीयत की थी कि उनकी नमाज़ जनाज़ा हज़रत साअद बिन अबी वक्कास पढ़ाए जो सहाबी थे। उनकी मृत्यु के बाद हज़रत साअद अकीका के स्थान पर थे और वहा से दूर थे। मर्वान ने कहा कि यह केसे हो सकता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सहाबी किसी अनुपस्थित व्यक्ति के कारण दफ़न न किया जाए। उपस्थित नहीं है इसलिए सहाबी के शरीर को उस समय तक रखा जाए जब तक वह न आ जायें और चाहा कि उन कि नमाज़ जनाज़ा स्वयं पढ़ा दें परंतु उबेदुल्लाह बिन अर्कम ने मरवान की बात न मानी और साअद बिन अबी वक्कास के आने पर हज़रत अर्कम की नामाज़ जनाज़ा पढ़ी गई और जन्नतुल बकी में दफ़न किये गए।

(असदुल ग़ाबा, भाग 1, पृष्ठ188, अरकम बिन अबी अल-अर्कम, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2003)

उनके संबंध में एक रिवायत यह भी है कि एक बार हज़रत अर्कम ने बैअतूल मुकद्दस जाने के लिए यात्रा करने का निर्णय किया, तैयारी की, जाना चाहते थे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास यात्रा पर जाने के लिए आज्ञा चाही तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि क्या तुम वहां बैअतूल मुकद्दस में किसी आवश्यकता के लिए या तिजारत के उद्देश्य से जा रहे हो? हज़रत अर्कम ने उत्तर दिया कि हे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरे मां-बाप आप पर फिदा हों कोई काम नहीं और न तिजारत के उद्देश्य से जाना है। बल्कि बैअतूल मुकद्दस में नमाज़ पढ़ना चाहता हूं। तो इस पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि काअबा के अन्यथा मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ और मस्जिदों की हज़ारों नमाज़ो से बेहतर है अर्थात यहां मदीने में जिस पर हज़रत अर्कम ने अपना निर्णय बदल लिया।

(असदुल ग़ाबा, भाग 1, पृष्ठ187, अरकम बिन अबी अल-अर्कम, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2003)

फिर जिन सहाबी का वर्णन है उनका नाम हज़रत बसबस बिन अमरो है। एक रिवायत में आप का नाम बसबस बिन बशर भी आया है। हज़रत बसबस बिन जोहनी अंसारी का संबंध कबीला बनू सायेद: बिन काब बिन खरूज से था जबकि उरवाह बिन जुबैर के अनुसार आप का संबंध बनू तारीफ बिन खज़रज से है। आप गजवा-ए-बदर में शामिल हुए थे। आप की गिनती अंसार सहाबा में होती है।

(असदुल ग़ाबा, भाग1, पृष्ठ379, अरकम बिन अबी अल-अर्कम, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2003) ग़जवा-ए-बदर के अन्यथा आप ने ग़जवा-ए-अहद में भी शिरकत की थी।

(अल तबकात अल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 422, बस बस बिन उमरो, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल-इल्मिया बेअरूत 1990)

ग़जवा-ए-बदर के लिए मदीना से निकलने का वर्णन करते हुए सीरत खातामुननाबिय्यन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए ने लिखा है कि : "मदीना से निकलते हुए आपने अपने पीछे अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम को मदीना का अमीर निर्धारित किया था। परंतु जब आप रोहा के निकट पहुंचे जो मदीना से 36 मील की दूरी पर है तो शायद इस ख्याल से कि अब्दुल्लाह एक अंधा व्यक्ति है और लश्कर-ए-कुरैश के आने का अनुमान है कि आपके पीछे मदीना का इंतेज़ाम मज़बूत रहे आप ने अबू लुबाबा बिन मुन्ज़िर को मदीना का अमीर निर्धारित कर के वापिस भिजवा दिया और अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम के संबंध में आदेश दिया कि वह केवल नामज़ो के इमाम रहेंगे परन्तु इन्तेज़मी कार्य अबू लुबाबा किया करेंगे।" यह लिखते है कि "मदीना में पहाड़ पर रहने वालो कि आबादी अर्थात क़ुबा के लिए आप ने आसिम बिन-अदि को अलग अमीर निर्धारित किया।"

आप ने जो ओमारा भेजें थे, निर्धारित किए या बदले वह यहां से "उसी स्थान से आप ने बसीस (अर्थात बसबस) और अदि नामी दो सहाबियों को दुश्मन की हरकतों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बदर की ओर भेजा और आदेश दिया कि वह तुरंत सूचना लेकर वापस आए।"

(सीरत खातामुननाबिय्यन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए पृष्ठ 354)

दो हफ्ते पहले खुत्बा में हज़रत अदि बिन अबी ज़ग्बा के वर्णन में इस घटना का वर्णन हो चुका है। जिन को भेजा गया था उनमें हज़रत बसबसावर हज़रत अदि बिन अबी ज़ग्बा दोनों शामिल थे। जब यह बदल के स्थान पर ख़बर लेने के लिए पहुंचे तो वहां हज़रत बसबस बिन उमरो और हज़रत अदि बिन अबी ज़ग्बा ने कुए के निकट एक टीले के पास अपना ऊंट बिठाकर अपनी मश्के लीं और कुए से पानी भरा और वहा पिया भी और इस मध्य उन्होंने वहां दो महिलाओं को बातें करते सुना जो किसी काफले के आने के बारे में बातें कर रही थीं।

(सीरत बिन हशशाम, पृष्ठ 617 बसबस व अदि यतजसान अल अख़बार, प्रकाशित त्रासुल इस्लाम मिस्र 1955)

और वहां एक व्यक्ति भी खड़ा था। बहरहाल यह दोनों वापस आए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उन महिलाओं की बातों के बारे में बताया कि वह एक काफले के आने के बारे में इस प्रकार बातें कर रही थीं वह व्यक्ति जो वहां खड़ा था उसका नाम मजदी था। (यह विस्तार मैं पहले बयान कर चुका हूं) तो इतिहासकार लिखते हैं कि अगली सुबह अबू सुफियान वहां पहुंचा जबकि एक काफिला भी वहां आया हुआ था। उसने मजदी से पूछा कि हे मजदी! क्या तूने ऐसे किसी व्यक्ति को देखा है जो यहां जासूसी के लिए आया हो? और साथ यह भी कहा कि यदि तू हमसे दुश्मन का हाल छुपाएगा तो कुरैश में से कभी कोई भी व्यक्ति तुझसे सुलाह नहीं करेगा। मजदी ने कहा अर्थात वह व्यक्ति जो खड़ा था खुदा की कसम मैंने यहां किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा जिसको मैं न पहचानता हूं। यहां से तेरे और यस्रब के मध्य कोई दुश्मन नहीं है और यदि कोई होता तो वह मुझसे छुप नहीं सकता और न ही मैं तुझसे उसको छुपाता वह कहता है परंतु हां यह है कि मैंने दो सवारियों को देखा था वह इस जगह रुके थे और उस जगह इशारा किया जहां हज़रत बसबस और हज़रत अदि रुके थे और उन्होंने अपने ऊंट बिठाए थे। कहने लगा कि उन्होंने यहां अपने ऊंट बिठाए थे, पानी पिया था और फिर यहां से चले गए अबू सुफियान इस जगह पर आया जहां दोनों सहाबा ने ऊंट बिठाए थे और उन दोनों ऊंटों की शौच उठा कर तोड़ने लगा। इसीलिए कि जिज्ञासा थी। जब उसने तोड़ी तो ऊंट के शौच में से खजूर की गुठली निकली तो अबू सुफियान बोला ख़ुदा की कसम!! अस्रब के रहने वाले ऊंटों का यही चारा है। यह तो वहां से आए हैं यह दोनों मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मोहम्मद के असहाब के जासूस हैं। अर्थात दोनों जो व्यक्ति आए थे यह तो मदीने से आए हैं और यह जासूस हैं। ऊंट की शौच से मुझे यह अनुमान लग गया है कि क्योंकि यहां आए थे। कहने लगा कि मुझे लगता है कि यह लोग बहुत निकट हैं। इसके पश्चात वह वहां जल्दी-जल्दी अपने काफिले को लेकर चला गया।

(किताब अल-मागाज़ी लील वाकादी, पृष्ठ 40 से 41 प्रकाशित आलिमुल कुतुब बेरूत 1984)

अरबों के समय में भी जासूसी के अनुमान लगाने की बड़ी प्रतिभा थी और यह भी जासूसी के ही अनुमान थे। इसके वर्णन में, बदर के युद्ध के वर्णन में सीरत खातामुननाबिय्यन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने यह लिखा है कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर के निकट पहुंचे तो किसी विचार के अधीन जिसका वर्णन रिवायत में नहीं है आप हज़रत अबू बककर को अपने पीछे सवार करके इस्लामी लश्कर से कुछ आगे निकल गए। उस समय आपको एक बूढ़ा बदवी मिला जिससे आपको बातों बातों में यह ज्ञात हुआ कि इस समय कुरैश का लश्कर बदर के बिल्कुल निकट पहुंचा हुआ है। आप यह ख़बर सुनकर वापस तशरीफ ले आए और हज़रत अली और ज़ुबेर बिन अल आवाम और साद बिन वकास आदि को जानकारी प्राप्त करने के लिए आगे भेजा और एक रिवायत के अनुसार भेजे जाने वालों में हज़रत बसबस भी शामिल थे। पहले तो यह लोग गए थे काफले की ख़बर लेने के लिए। अब जो पता लगा कि लश्कर आ रहा है तो उस लश्कर की ख़बर लेने के लिए जिन लोगों को भेजा उनमें यह शामिल थे। जब यह लोग बदर के स्थान में गए तो अचानक क्या देखते हैं के मक्का के कुछ लोग एक झरने से पानी भर रहे थे। उन सहबियोँ ने उन पर, जमाअत पर आक्रमण करके उनमें एक हब्शी गुलाम को पकड़ लिया और उसे हुज़ुर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आए। जब वे लेकर आए उस समय हुज़ुर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ में व्यस्त थे। सहाबा ने यह देखकर कि हुज़ुर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो नमाज़' में व्यस्त हैं स्वयं उस गुलाम से पूछना शुरू किया कि अबू सुफियान का काफिला कहां है? यह भी हब्शी गुलाम क्योंकि लश्कर के साथ आया था। वह तो इस लश्कर के साथ आया था जो बदर की जंग के लिए आ रहे थे। उसको तो काफिले का ज्ञान नहीं था और वह काफिले से बेखबर था उसने उत्तर में कहा कि अबू सुफियान का तो मुझे ज्ञान नहीं है परंतु अब्दुल हकम अर्थात अबू जहल और उत्बा और शेबा और उमैय्या आदि उस वादी के दूसरे किनारे डेरे डाले पड़े हैं। सहाबा ने जिनको तो केवल काफले का पता था न, यही अनुमान था और यही उन्हों ने दिमाग में बिठाया हुआ था तो उन्हों ने यही समझा कि यह झूठ बोल रहा है और जानबूझकर काफिले की सूचना को छुपाना चाहता है जिस पर कुछ लोगों ने उसे कुछ मारा पीटा भी, कष्ट दिया। उसे मारते थे वह डर के मारे कह देता था कि अच्छा मैं बताता हूं और जब उसे छोड़ देते थे तो वह फिर वही पहला उत्तर देता था कि मुझे अबू सुफियान का, उसके काफिले का ज्ञान नहीं है। हां परंतु अबू जहल एक लश्कर लेकर आ रहा है और वह पास ही मौजूद है। हुज़ुर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बातें सुनी तो आपने जल्दी से नमाज़ को पढ़कर सहाबा को मारने से रोका और फ़रमाया जब वह सच्ची बात बताता है तुम उसे मारते हो और झूठ कहने लगता है तो छोड़ देते हो। फिर आपने स्वयं नरमी के साथ उससे पूछा कि लश्कर इस वक्त कहां है? उसने उत्तर दिया इस वकत सामने वाले टीले के पीछे है। आपने पूछा कि लश्कर में कितने आदमी हैं? उसने उत्तर दिया के बहुत हैं परंतु पूरी संख्या मुझे ज्ञात नहीं है। आपने फ़रमाया अच्छा यह बताओ कि उनके लिए खाना खाने के लिए प्रतिदिन कितने ऊंट ज़िबाह होते हैं? उसने कहा 10 होते हैं। दस ऊंट काफिले के लिए ज़िबाह होते हैं। सामान के अन्यथा खाने-पीने का भी इतना सामान लेकर आए थे। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा की ओर ध्यान देते हुए फ़रमाया कि दस ऊंट ज़िबाह होते हैं तो इसका अर्थ है कि 1000 आदमी उनके साथ आए हैं और वास्तव में वह इतने ही लोग थे।

(सीरत खातामुननाबिय्यन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 355 से 356)

फिर जिन सहाबी का वर्णन है हज़रत साअलबा बिन अमरो, अंसारी थे। हज़रत साअलबा का संबंध कबीला बनू नज्जार से था। आप की माता का नाम कब्शा था। जो के प्रसिद्ध शायर हस्सान बिन साबित की बहन थी। हज़रत साअलबा गज़वा बदर समेत समस्त गज़वात में हुज़ुर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। आप उन असहाब में भी शामिल थे जिन्होंने बनू सलमा के बुत तोड़े थे आपकी मृत्यु हज़रत उमर के दौरे खिलाफत में जसर के युद्ध अर्थात पुल वाले युद्ध में हुई थी। जसर का युद्ध जिसरानियोँ के साथ 14 हिजरी में हुई या तिब्री में 13 हिजरी का दर्ज है कि यह युद्ध हुआ था। उस युद्ध में दोनों ने अर्थात हज़रत अबू उबेदाह की निगरानी में मुसलमानों का लश्कर और बहमन जाज़विया की निगरानी में ईरानी फौज फारात के दरिया पर आमने सामने थीं। दरिया को पार करके युद्ध करने के लिए एक जस्र अर्थात पुल बनाया गया था। इसी कारण इसको जस्र का युद्ध कहा जाता है। कुछ के निकट उनकी मृत्यु हज़रत उस्मान के दौरे खिलाफत में मदीना में हुई थी।

(रोजुल अल अनफ, भाग 3, पृष्ठ158 से 159) (अल तबकात अल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 386)

फिर जिन साहाबी का वर्णन है हज़रत साअलबा बिन गनामा। हज़रत साअलबा का नाम एक रिवायत में साअलबा बिन गनामा भी आया है। हज़रत साअलबा कि माता का नाम जहीराह पुत्री कैन था। आपका संबंध अंसार के कबीले बनू सलमा से था। हज़रत साअलबा उन 70 सहाबा में शामिल थे जिन्होंने दूसरी बैअते उक्बा में हुज़ुर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की थी। हज़रत साअलबा जब ईमान लाए तो आपने, हज़रत माआज़ बिन जबल और अब्दुल्ल्लाह बिन उनेस ने मिल कर बनू सलमा के अर्थात अपने कबीला के ही बुत तोड़े। आप गज़वा ए बदर, अहद, और खंदक में शामिल हुए और गज़वा ए खंदक में हुबैरह बिन अबी वाहब ने हज़रत साअलबा को शहीद किया। एक रिवायत के अनुसार हज़रत साअलबा गज़वा ए खेबर के अवसर पर शहीद हुए थे।

(अल तबकात अल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 435, सलबा बिन अबी ग़नमा, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल-इल्मिया बेअरूत 1990)

फिर जिन सहाबी का वर्णन है उनका नाम है हज़रत जाबिर बिन खालिद। हज़रत जाबिर बिन खालिद का संबंध अंसार के कबीला बनू दीनार से था हज़रत जाबिर बिन खालिद गजवा ए बदर और अहद में शामिल हुए थे।

(अल तबकात अल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 394, सलबा बिन जाबिर बिन खालिद, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 1990)

फिर एक सहाबी हैं हज़रत हारिस बिन नोमान बिन उमय्या, अंसारी थे। हज़रत हारिस का संबंध अनसार के कबीला ओस से था। आप गज़वा ए बदर और गज़वा ए अहद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए थे आप हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर और हज़रत खाव्वत बिन ज़ुबेर के चाचा थे साअफैन के युद्ध पर हज़रत अली की ओरसे शामिल हुए थे। (असदुल ग़ाबा, भाग 1, पृष्ठ 641,हारिस बिन नुमान, प्रकाशित दारूल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2003)

फिर हज़रत हारिस बिन अनस अंसारी हैं। उनकी माता का नाम हज़रत उम्मे शरीक था। और पिता अनस बिन राअफे थे। आपकी माता ने भी इस्लाम स्वीकार किया और रसूलुल्लाह की बेअत से मुशर्रफ हुई थीं। हज़रत हारिस का संबंध कबीला ओस कि शाख बनू अब्द अल-आशहल से था गज़वा ए बदर और अहद में शामिल हुए थे और गज़वा ए अहद में आपको शहादत प्राप्त हुई। हज़रत हारिस उन कुछ असहाब में से थे जो गज़वा ए अहद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के साथ दर्रे पर डटे रहे और शहीद हो गए। (अल

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 12 का शेष

मस्जिद "बैतुल समद" बाल्टीमूर में शुभागमन

1 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का मस्जिद "बैतुल समद" में शुभागमन हुआ। हुज़ूर अनवर पहले मिशन हाउज़ के निवास स्थान पर आए। यह यहाँ के मुबल्लिग़ सिलसिला का घर है। यहाँ अस्थाई क़याम का प्रबंध किया गया था 2:30 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुल समद पधारे जहाँ जमाअत के लोगों स्त्रीयों तथा पुरषों की बड़ी संख्या ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का भरपूर स्वागत किया। जोश से भरे हुए नारे बुलंद किए। बच्चों तथा बच्चियों के ग्रुप्स ने स्वागत के गीत प्रस्तुत किए। बाल्टीमूर की जमाअत के लिए आज का दिन किसी ईद से कम न था। आज का मुबारक दिन उनके लिए बहुत खुशियाँ तथा बरकतें ले कर आया था। हुज़ूर अनवर के मुबारक क़दम इनकी ज़मीन पर पहली बार पड़े थे। स्त्री-पुरुष, बच्चे-बच्चियां सुबह से ही अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए जमाअत के केंद्र "मस्जिद बैतुल समद" पहुंचना आरंभ हो गए थे। बाल्टीमूर की मक़ामी जमाअत के अतिरिक्त आस-पास की जमाअतों से लोग बड़ी अधिकता से पहुंचे थे। कुछ लोग तो बहुत दूर की जमाअतों से दो-दो तीन-तीन हज़ार मील की बड़ी लम्बी यात्रा तय कर के आए थे। हुज़ूर अनवर का स्वागत करने वालों की संख्या एक हज़ार आठ सौ के लगभग थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपना हाथ उठा कर उनके नारों का उत्तर दे रहे थे।

मस्जिद बैतुल समद का निरीक्षण तथा उद्घाटन

हुज़ूर अनवर ने मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी प्लेट का पर्दा हटाया तथा अनावरण फ़रमाया और दुआ करवाई। इसके पश्चात् हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद से लॉबी में आ गए तथा चित्रों की प्रदर्शनी का निरीक्षण फ़रमाया। इस लॉबी में विभिन्न भागों में चित्र लगाए गए हैं। चित्र प्रदर्शनी के पांच भाग हैं। प्रथम भाग मस्जिद बैतुल समद के चित्रों और अमरीका में निर्मित कुछ अन्य मस्जिदों के चित्रों पर आधारित है।

दूसरा भाग संसार भर में जमाअत अहमदिया की निर्मित होने वाली कुछ मस्जिदों के चित्रों पर आधारित है। तीसरा भाग जमाअत अहमदिया अमरीका का संक्षिप्त इतिहास इसी प्रकार जमाअत अहमदिया अमरीका के कल्याणकारी प्रोग्रामों के चित्रों पर आधारित है। चौथा भाग खुलफ़ाए अह्मदियत के अमरीका के आगमन पर जबकि पांचवां भाग हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से विभिन्न क़ौमों तथा देशों के लीडरों से भेंट और हुज़ूर अनवर के विभिन्न देशों में भाषणों के चित्रों पर आधारित है।

प्रदर्शनी के निरीक्षण के दौरान बाल्टीमूर के निवासी एक पुराने अफ्रीकी अमेरिकी अहमदी ने हुज़ूर अनवर से भेंट का सौभाग्य प्राप्त किया। मौसूफ़ ने 1960 में बैअत की थी। मौसूफ़ ने इस वर्ष जलसा सालाना यूके पर आने के लिए कार्यक्रम बनाया था ताकि जीवन में एक बार हुज़ूर अनवर से मिल सके लेकिन अपनी बीमारी और कठिनाई के कारण यात्रा के योग्य न हो सके। आज अल्लाह तआला ने उनके घर में उनकी इच्छा पूरी कर दी। मौसूफ़ बहुत खुश थे और उनकी आँखों में आँसू भरे थे।

इसके बाद हुज़ूर अनवर मस्जिद के मर्दाना हाल में आए और निरीक्षण किया। इसके पश्चात् हुज़ूर अनवर ने रसोई और भोजन कक्ष का भी निरीक्षण किया। अंत में हुज़ूर अनवर ने मस्जिद के बाहरी हिस्से का भी निरीक्षण किया और सदर साहिब जमाअत बाल्टीमूर डाक्टर फहीम यूनिस कुरैशी साहिब से इस निर्माण पर होने वाली लागत के संदर्भ में पूछा। जिस पर मौसूफ़ ने कहा कि चर्च की इमारत की ख़रीद और इसे मस्जिद की इमारत में बदलने पर 20 लाख डॉलर के लगभग ख़र्च आया है। इसके बहुत से भाग परिवर्तन के कारण नए रूप से बनाए गए हैं।

यह इमारत अगस्त 2015 में ख़रीदी गई थी। जनवरी 2017 से नवंबर 2017 तक कुछ हिस्सों का नवीनीकरण और निर्माण करके इसे मस्जिद में बदल दिया गया।

मस्जिद का कुल भाग 13,000 वर्ग फुट पर आधारित है। नमाज़ पढ़ने के लिए पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग हॉल हैं, जिसमें चार सौ के लगभग लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं। दो डाइनिंग हाल भी हैं। कार्यालय भी बनाए गए हैं। इसके अतिरिक्त दो सम्मेलन कक्ष भी हैं। इस मस्जिद में दो लाइब्रेरियाँ स्थापित की गई हैं। एक कमर्शियल किचन है। इसके अतिरिक्त एक रेगुलर किचन भी है। चार क्लासरूम हैं जहां बच्चों कि शैक्षिक व तरबियती कक्षाएं होती हैं। मस्जिद में एक उच्च-गुणवत्ता की ऑडियो वीडियो प्रणाली भी स्थापित की गई है। इत्फाल और नस्रात के लिए बिल्डिंग के अंदर खेलने की सुविधा भी प्रदान की गई है।

यह मस्जिद एक राजमार्ग पर स्थित है, जहाँ रोज़ाना यात्रा करने वाले लगभग 35 हज़ार गाड़ियों के यात्री इस मस्जिद को देखते हैं। इस मस्जिद के बाहरी इलाके में एक सौ से अधिक वाहनों की पार्किंग उपलब्ध है।

नमाज़ जनाज़ा हाज़िर

मस्जिद बैतुल समद के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी भाग में निम्नलिखित दो महिलाओं की नमाज़े जनाज़ा हाज़िर पढ़ाई और उनके परिवार वालों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की।

(1) सेंट्रल वर्जीनिया की मुकर्मा सिद्दीका समी साहिबा। 17 अक्टूबर को उनका निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन। आप तुफैल मलिक साहब की बेटी थीं, जिन्हें हज़रत मुस्लेह मौऊद के हाथ पर बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मर्हुमा की शादी मेजर (सेवानिवृत्त) अब्दुल समी साहिब मरहूम के साथ हुई जो हज़रत मुंशी इस्माईल साहिब सियालकोटी रज़ि. के पोते थे। मर्हुमा ख़िलाफ़त से प्रेम करने वाली और नमाज़ों की पाबन्द नेक महिला थीं। मर्हुमा ने अपने पीछे तीन बेटे और दो बेटियां यादगार छोड़ी हैं।

(2) सेंट्रल वर्जीनिया की मुकर्रमा कौसर पाल साहिबा। 18 अक्टूबर, 2018 को उनका निधन हो गया। आप मंसूर अहमद पाल साहिब मरहूम की पत्नी थीं। पिछले छह महीने से बीमार थीं। मर्हुमा मुसिया थीं और इन का जमाअत से गहरा संबंध था। आपके बेटे फौज़ान पाल साहिब स्थानीय जमाअत में बतौर जनरल सेक्रेटरी तथा ज़ईम मजलिस अंसारुल्लाह ख़िदमत की तौफ़ीक़ प्राप्त कर रहे हैं। आपकी एक बेटी दुर्दाना इक़बाल साहिबा भी हैं।

नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद में पधारे और नमाज़ ज़ोहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों के पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ लज्ना के हॉल में पधारे जहाँ महिलाओं ने मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी आवरण में एक पौधा लगाया। इसके बाद मज्लिसे आमला जमाअत बाल्टीमूर, मज्लिस आमला अंसारुल्लाह और मज्लिस आमला खुद्दामुल अहमदिया बाल्टीमूर ने अलग-अलग हुज़ूर अनवर के साथ चित्र बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

महिलाओं की संख्या अधिक होने के कारण पार्किंग क्षेत्र में महिलाओं के लिए एक मार्की स्थापित की गई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कृपा दृष्टि करते हुए इस मार्की में भी पधारे। महिलाओं ने नारे लगाए और अपने प्यारे आक़ा के दीदार का सौभाग्य प्राप्त किया। इसके पश्चात् 3:15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आवास स्थान पर चले गए।

मस्जिद "बैतुल समद" के उद्घाटन का आयोजन

कार्यक्रम के अनुसार शाम के 5 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास से बाहर आए और हिल्टन होटल बाल्टीमूर के लिए रवाना हुए जहां मस्जिद "बैतुल समद" के उद्घाटन के संदर्भ में एक समारोह आयोजित किया गया था। पुलिस की पांच गाड़ियों ने क़ाफिले को एस्कॉर्ट किया। पाँच बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ होटल पहुंचे।

प्रेस कांफ्रेंस

कार्यक्रम के अनुसार, पांच बजकर पैंतालिस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कांफ्रेंस रूम में आए, जहां प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई थी। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में (RNS) religious news service के तीन पत्रकार और प्रतिनिधि जैक जेनकिंस, आयशा खान और टॉम गैलाघेर मौजूद थे। इसके अतिरिक्त स्टीनर रेडियो शो के प्रतिनिधि और पत्रकार मार्क स्टीनर भी शामिल थे। (एनपीआर) नेशनल पब्लिक रेडियो के पत्रकार और प्रतिनिधि जेरोम सोकोलोव्स्की भी उनमें शामिल थे।

★ एक पत्रकार ने सवाल किया कि अब अमेरिका में मिड टर्म चुनाव होने

जा रहे हैं। आप विभिन्न राजनेताओं से भी मिलते हैं। क्या आपके पास इन चुनावों के लिए अपने समुदाय या अमेरिकी संदर्भ के लिए कोई संदेश है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया "मुझे राजनीति का वर्णन करने की कभी जिज्ञासा नहीं रही लेकिन ब्रिटेन के नागरिक के रूप में मैं अपना वोट डालता हूँ। जमाअत के लिए तो यही संदेश है कि हमेशा उन लोगों को चुनने की कोशिश करें जो विनम्र हैं और जो अपने चुनावी भाग में सेवा की भावना रखते हों। यह वह संदेश है जो कुरआन ने हमें दिया है कि ऐसे लोगों को चुनो जो आपकी बेहतर सेवा कर सकते हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि राष्ट्र का नेता राष्ट्र का सेवक होता है। इसलिए हम तो उसी को चुनने की कोशिश करते हैं जो राष्ट्र की बेहतर रंग में सेवा कर सकता है या जिसे हम समझते हैं कि वह बेहतर सेवा करेगा।

★ एक पत्रकार ने सवाल किया कि जमाअत अहमदिया अमरीका में और अन्य देशों में स्थापित अहमदिया जमाअतों में क्या बड़ा अंतर है? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "हम अहमदी हर जगह एक समान हैं। जो व्यक्ति अहमदी होता है आप उसके व्यवहार में बदलाव देखते हैं और कुछ में एक अद्भुत क्रांति आ जाती है। इसलिए मैं हमेशा कहता हूं कि अहमदियों की सोच, उनकी चिंता, उनका दृष्टिकोण हर जगह समान है चाहे वे अमेरिका या उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, यूरोप, ब्रिटेन या एशिया या अरब देश या अफ्रीका में हों। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं का पालन करते हैं। जैसा कि देश की सेवा करना, कानून की पाबंदी करना और देश के लिए वफ़ादारी और सबसे बढ़कर यह देखना कि प्रत्येक समय अल्लाह देख रहा है जो भी वह कर रहे हैं, अल्लाह उन्हें देख रहा है। यदि यह विशेषताएँ लोगों में होंगी तो उनका स्तर समान होगा।

★एक पत्रकार ने कहा कि मेरा सवाल सेना के बारे में है। मैंने अहमदी और अन्य मुसलमान सेना में देखे हैं। उनमें से अधिकतर मुस्लिम समुदाय और गैर-मुस्लिम समुदायों के बीच संपर्क बढ़ाने की कोशिश करते हैं। क्या आपको लगता है कि जो सेना में सेवारत हैं वे अधिक आगे आएं और बाधाओं को दूर करने की कोशिश करें। इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि असल तथ्य यह है कि देश का नागरिक होने के नाते सर्वप्रथम ज़िम्मेदारी देश से वफ़ादारी है। इस्लाम कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने देश के प्रति ईमानदार हो। तो सिर्फ सेना में ही नहीं, बल्कि जीवन के दूसरे क्षेत्रों से जुड़े बहुत से लोग ऐसे हैं जो मुसलमानों और गैर-मुस्लिमों की बाधाओं को दूर करने की कोशिश करते हैं। जैसा कि सेना से मेरा कोई संबंध नहीं है मैं भी यह कोशिश कर रहा हूं और जमाअत के अन्य लोग भी करते हैं।

यदि आप इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं का पालन कर रहे हैं, तो इस्लाम कहता है कि एक दूसरे के साथ आपसी प्रेम, सद्भाव और एक साथ रहने को बढ़ावा देते हुए जीवन व्यतीत करो। धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं है। एक दूसरे के धर्म का सम्मान करो। यह इस्लाम की शिक्षा है। इस संदर्भ से इतना ज़ोर दिया जाता है कि कुरआन करीम में आता है कि अन्य धर्मों की मूर्तियों को भी बुरा भला न कहो, क्योंकि वे प्रतिक्रिया में अल्लाह के संदर्भ में कुछ बुरा-भला कहेंगे और इस कारण से समाज में बेचैनी फैल जाएगी। तो यह तो इस्लाम की बुनियादी शिक्षा का हिस्सा है कि समाज में आपसी प्रेम का वातावरण स्थापित करो। मानवता और मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता दो।

हम सब अपने ख़ुदा की शिक्षा फैलाने वाले हैं। अल्लाह तआला समस्त संसार को आजीविका देने वाला है इस बात को अनदेखा करके कि आपका धर्म क्या है मुसलमान हैं या यहूदी या इसाई है या हिंदू हैं या कोई या अधर्मी हैं या नास्तिक हैं, सबका अल्लाह तआला पालन पोषण कर रहा है। जब अल्लाह तआला ही सबका रब्ब है तो फिर क्या कारण है कि उसकी सृष्टि आपस में लड़े तो इस संदर्भ में केवल फौज में सेवा करने वालों को ही नहीं बल्कि मुसलमान होने के कारण प्रत्येक को प्रयास करना चाहिए ।

* एक पत्रकार ने प्रश्न किया कि क्या आप परेशान होते हैं जब अन्य मुसलमान आपको गैर मुस्लिम कहते हैं ? इसके उत्तर में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया यह तो ईमान का मामला है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी है कि अंतिम युग में एक व्यक्ति अवतरित होगा जो इस्लाम को पुन: जीवित करेगा। उस अंधकारमय समय में इस्लाम एवं क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाएं तो होगी किंतु मुसलमान वास्तविक शिक्षाओं से दूर हट जाएंगे और उन शिक्षाओं से अपने-अपने अर्थ निकालेंगे। तो ऐसे युग में एक मुस्लेह पैदा होगा और वह मसीह मौऊद और मेहदी मौहूद होगा। हम विश्वास रखते हैं कि यह भविष्यवाणी संस्थापक जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलातो वस्सलाम के अस्तित्व में पूर्ण हो चुकी है। किंतु अन्य मुसलमान इसका इंकार करते हैं। वह यह कहते हैं कि जब ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से अवतरित होंगे तब उन के पश्चात मेहदी आएगा और फिर यह दोनों मिलकर इस्लाम को जीवित करने के लिए कार्यरत होंगे। फिर वह कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात कोई नबी नहीं आएगा। जबकि हम विश्वास रखते हैं के अधीनस्थ नबी आ सकता है किन्तु नई शरीयत वाला नबी नहीं आ सकता है। क़ुरआन-ए-करीम शरीयत की अंतिम पुस्तक है। ऐसा नबी आ सकता है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण आज्ञाकारिता में आए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं को आगे बढ़ाए। फिर अन्य मुसलमान यह विश्वास रखते हैं कि जब ईसा अलैहिस्सलाम अवतरित होंगे तो वह नबी होंगे क्योंकि नबी का टाइटल ईसा के पास पहले ही है। वह तो नहीं छिन सकता। एक तरफ़ तो वह यह कहते हैं कि नबी नहीं आ सकता और अपने सिद्धांत के अनुसार एक नबी की ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन संस्थापक जमाअत अहमदिया को वह नबी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। तो यह सिद्धांत का फ़र्क है जो उनकी चिंता का कारण है। अब यह बजाए इसके कि मसीह के पुन: आगमन और मेहदी के आगमन की बातें करें , आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कि ख़त्मे नुबुव्वत द्वारा लोगों को क्रोध दिला रहे हैं। यह कह रहे हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात कोई नबी नहीं आ सकता और क्योंकि अहमदी अपने संस्थापक को नबी कहते हैं इसलिए यह ग़ैर मुस्लिम हैं , काफ़िर हैं और मुर्तद हैं। क्योंकि अहमदी स्वधर्मत्याग के पात्र हैं इसलिए उनकी सज़ा क़त्ल होनी चाहिए, उनके सिर काट देने चाहिए, जो कि उनकी नज़र में मुर्तद की सज़ा है। जहाँ तक इस बात का संबंध है हमें इस विरोध से कोई कठिनाई है, कदापि नहीं। हम तो दिन प्रतिदिन तरक्की कर रहे हैं। उनके समूह से लोग निकल निकल कर जमाअत में सम्मिलित हो रहे हैं। प्रत्येक वर्ष जमाअत में लाखों लोगों की वृद्धि हो रही है। हम एक धार्मिक जमाअत हैं हम विश्वास रखते हैं कि एक दिन आएगा कि हम लोगों के दिल जीत लेंगे और इंशाअल्लाह अल्पसंख्यता से अधिकतता में आ जाएंगे।

* एक प्रश्न यह किया गया कि लोगों के मध्य शांति एवं प्रेम कि फ़िज़ा स्थापित करने हेतु आप अहमदिया मुस्लिम जमाअत का क्या रोल देख रहे हैं। इस सन्दर्भ में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि : हम तो इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं और इस्लाम का अर्थ ही शांति प्रेम और सामंजस्य है। प्रत्येक स्थान पर शांति फ़ैलाने का प्रयास कर रहे हैं। विभिन्न प्रोग्राम आयोजित कर रहे हैं, प्रेस कान्फ्रेंसेज़, सेमीनारज़, सिमपोज़ियम इत्यादि का आयोजन कर रहे हैं और अन्य धर्मो के अनुयायीयों को भी साथ सम्मिलित कर रहे हैं इसका उद्देश्य यही है कि हम इस संसार में शांति और प्रेम की फ़िज़ा स्थापित करें। मैं भी इसी उद्देशय के लिए विभिन्न देशों में जाता हूँ। मैं स्वयं भी लैक्चर्ज़ और सम्बोधन करता हूँ। और इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को बताता हूँ। ऐसी शिक्षाएं जिनके द्वारा शांति एवं सामंजस्य की स्थापना संभव हो सकती है। मैं समझता हूँ कि एक सच्चे मुसलमान में बर्दाश्त करने की क्षमता बहुत ऊँची होनी चाहिए और हम इसी मार्ग पर अपना किरदार अदा कर रहे हैं। (यह प्रेस कान्फ्रेंस 6 बजकर 5 मिनट तक जारी रही।)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ के साथ सैनिटर Hon. Ben Cardin की मुलाक़ात:

इसके पश्चात मैरीलैंड के एक सैनिटर Hon. Ben Cardin ने जो आज के इस प्रोग्राम में भाग लेने के लिए आए हुए थे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की। आदरणीय ने हुज़ूर अनवर अय्यद-हुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ को स्वागतम कहा और कहा कि हम आपकी

बहुत इज्ज़त करते हैं। आपकी इंटरनेशनल लीडरशिप का सत्कार करते हैं। आपने विशेष रूप से स्वतंत्रता के सन्दर्भ में अधिकार दिलवाने के प्रति और विभिन्न संगठनो के मध्य संबंध बनाने हेतु बहुत बड़ी लीडरशिप दिखाई है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : यही इस दौर की सब से बड़ी समस्या है और हम तेज़ी से विनाश की ओर जा रहे हैं, बजाए इसके कि हम शांति और प्रेम को फैलाएं।

सैनिटर साहिब ने कहा कि आजकल बहुत सी समस्याएँ हैं, सऊदी अरब के पत्रकार का क़त्ल है, यमन सीरिया की समस्या है, वेनेज़ुएला की समस्या है। इन सब बातों से शन्ति भंग हो रही है। इस कारण से हुज़ूर के शांति संदेश की बहुत आवश्यकता है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : यह बहुत अफ़सोस की बात है कि मुसलमान ही मुसलमान को मार रहा है और बिना सोचे समझे आपस में लड़ते जा रहे हैं। बच्चों को भी मारा जा रहा है। बहुत ही पीड़ा होती है यह सारी परिस्थितियां देख कर। अमेरिका एक बड़ी शक्ति है, अमेरिका को शांति के सन्दर्भ से और मानवता की सेवा के सन्दर्भ से अपना किरदार अदा करना चाहिए।

इस पर सैनिटर साहिब ने कहा कि मैं हुज़ूर अनवर से शत प्रतिशत सहमत हूँ। अत: आदरणीय ने कहा कि हुज़ूर का संदेश बहुत पावरफुल है। आप जैसे व्यक्तित्व की हम बाल्टीमोर में प्रथम बार अतिथि-सत्कार कर रहे हैं। हम हुज़ूर अनवर के आभारी हैं कि आप यहाँ आए और आपने यहाँ मस्जिद का निर्माण किया है और इसका उद्घाटन किया है, यहाँ आपकी बहुत अच्छी कम्युनिटी है। हमें इस से बहुत ख़ुशी है।

अंत में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : हम सब हज़रत इब्राहीम के धर्म के अनुयाई हैं औ आपको मानने वाले हैं। ईसाई हों, या मुसलमान हों, यदि इस बात को समझ लिया जाए तो फिर संसार में शांति की स्थापना हो सकती है। अंत पर सैनिटर साहिब ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाई। सैनिटर साहिब की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला के साथ यह मीटिंग 6 बजकर 15 मिनट पर समाप्त हुई।

बाल्टीमोर के अन्य सम्मानित लोगों से मुलाक़ात:

इसके पश्चात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ होटल के एक वेटिंग रूम में आए जो Blake Room के नाम प्रख्यात है। यहाँ निम्नलिखित लोगों हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

Hon. Catherine Pugh (मेयर आफ़ बाल्टीमोर)
Jill Carter (मैरी लैंड स्टेट सैनिटर)
Pamela Biedle (मेम्बर मैरी लेंड हॉउस आफ़ डैलीगैट्स)
Marylin Mosbi (स्टेट आटरनी फ़ार बाल्टीमोर)
Jon Wobensmith (सेक्रेटरी आफ़ स्टेट मैरीलैंड)
Vicky Almond (कौंसिल वुमेन बाल्टीमोर काउंटी)
Nicky Mosbi (कौंसिल मेन बाल्टीमोर काउंटी)
Brent Howard (प्रेसिडेंट चैम्बर आफ़ कामर्स)
Hon. Michael Adamo (गैबून देश के एम्बेसडर)
(कीनिया के एम्बेसडर के प्रतिनिधि जो एम्बेसी में इकनामिक कौंसलर हैं)
Mustafa Sosseh (स्टेट एम्बेसडर गेम्बिया)
Fred Guy (डायरेक्ट्र आफ़ युनिवर्सिटी आफ़ बाल्टीमोर फ़िलासफ़ी डिपार्टमेंट)
Mojor Travis Hord (कमांडिंग आफ़िसर यू.एस मेरीन्स)
Colonel Jones (बाल्टीमोर काउंटी पुलिस)
Gary Tuggle (कमिश्नर बाल्टीमोर सिटी पुलिस)
Father Joseph Muth (पादरी आफ़ सैंट मैथ्यूज़ चर्च)
Rabbi Andy (Hebrew Congregation बाल्टीमोर)
Christine Spencer (Dean of Yale Gardon school of Arts बाल्टीमोर युनिवर्सिटी)
Anthony Day (प्रेज़िडेंट आफ़ लोयाला हाई स्कूल)
Natalie Eddington (Dean University of Marand School of Pharmac.)

इन अतिथियों से मुलाक़ात के आरम्भ में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि : आप सब का यहाँ आने का बहुत धन्यवाद। आप लोगों ने हमारे प्रोग्राम के लिए अपनी व्यस्तताओं से समय निकाला है। विशेषकर आज आप लोगों का अवकाश भी है और अपनी फ़ैमिली के साथ समय व्यतीत करने की बजाए आप यहाँ आए हैं।

इस पर एक महिला अतिथि ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि आप यहाँ पधारे हैं।

एक महिला ने कहा शांति का संदेश, दूरियों को समाप्त करने का संदेश ऐसा है कि इसकी बहुत आवश्यकता है। हमारे लिए यह बहुत सम्मान की बात है कि आप यहाँ हमारे शहर में पधारे हैं। हम आपको यू.एस.ए आने पर सूस्वागतम कहते हैं और आपका धन्यवाद अदा करते हैं। आपकी उपस्थिति हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आपने जो सामंजस्य एवं प्रेम का संदेश दिया है यह हमारे लिए अत्यंत बहुमूल्य है।

मैयर बाल्टीमोर सिटी ने कहा कि मैं बाल्टीमोर सिटी के समस्त निवासियों की ओर से हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा करता हूँ। मैयर ने कहा हम जिस दौर से गुज़र रहे हैं उसमें इस सन्देश की बहुत महत्वता है। मैं इस से बहुत प्रभावित हुई हूँ और चाहती हूँ कि संसार में प्रत्येक स्थान पर इस संदेश पर कार्य किया जाए ताकि संसार शांति का गहवारा बन सके। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि आप यहाँ पधारे हैं और आशा करती हूँ कि जो लोग यहाँ आए हैं आपका संदेश लेकर जाएँ और उस पर कार्यरत हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ ने उनका धन्यवाद किया। अत: फ़रमाया कि समय की आवश्यकता है कि हम समाज में शांति स्थापित करें और सामंजस्य एवं एकता से प्रेम की फ़िज़ा स्थापित करें। यदि संसार इस संदेश को समज जाए तो बहुत ख़ूबसूरत है। फिर यह बात भी बहुत अहम है कि हम सब अपने पैदा करने वाले को पहचानें क्योंकि हम एक सर्वपालक ख़ुदा के सृजन हैं और उसका सृजन होने के कारण हमें पारस्परिक प्रेम से रहना चाहिए। यदि यह संदेश समझ लिया जाए तो जैसा कि मैंने कहा है सब कुछ ठीक हो जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ ने मैयर से बाल्टीमोर के विभिन्न ज़िलों के सन्दर्भ में फ़रमाया।

मैयर ने बताया कि वह मैयर के अन्यथा सिटी कौंसिल के सदर है। अत: बाल्टीमोर के 14 ज़िले हैं और उन समस्त के प्रतिनधि कौंसिल का हिस्सा हैं। मैयर ने अपने साथ आई हुई एक असिस्टेंट का भी परिचय करवाया। यह शांति स्थापना हेतु मैयर के साथ मिलकर कार्य कर रही हैं।

उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ का धन्यवाद किया और कहा कि हुज़ूर मेरे विचार में हम आज कल जो जंग लड़ रहे हैं यह एक ऐसी लडाई है जिसपर समस्त नकारात्मक शक्तियाँ हमला कर रही हैं । हमें इस सन्दर्भ में युवा पीढ़ी पर ध्यान देने की अत्यंत आवश्यकता है। हमारे यहाँ पिछलों दो वर्षों की अपेक्षा दुगनी संख्या में युवाओं में क़त्ल या क़त्ल का प्रयास के मुक़द्दमे दर्ज हुए हैं। हमें युवा पीढ़ी पर ध्यान देने की बहुत आवश्यकता है। मैं आपका बहुत धन्यवाद करती हूँ। यह मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है कि मैं आप से मिल सकी हूँ और आपकी बातें सुन सकी हूँ।

हुज़ूर अनवर ने पूछा कि इस बढ़ते हुए रुझान का क्या कारण है। इस पर उन्होंने बताया कि जहाँ तक मैंने सर्वेक्षण किया है हमारे बाल्टीमोर शहर में ऐसी घटनाएँ नौजवानों में निराशा के बढ़ने के कारण बढ़ रही हैं। नौजवानों में आशाहीनता है। बाल्टीमोर की 24 प्रतिशत आबादी ग़रीबी में जीवन व्यतीत कर रही है। आर्थिक व्यवस्था भी एक कारण है। बेरोज़गारी बढ़ रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि क्या बेरोज़गारों के लिए सामाजिक सहायता हेतु कोई प्रणाली मौजूद है? इस पर मैयर साहिब ने उत्तर देते हुए कहा कि हमें यहाँ बहुत से चैलेन्ज़ का सामना है। हम बच्चों के सन्दर्भ में उनकी शिक्षा पर अत्यधिक बल दे रहे हैं। विद्यार्थियों में ड्रग्स के रुझानों की ओर भी बहुत कार्य करने की आवश्यकता है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : तो फिर ड्रग्स इशु है, शिक्षात्मक समस्याएं हैं, आर्थिक समस्याएं हैं, बेरोज़गारी है, अत: फ़रमाया कि सामाजिक मीडिया भी बैचेनी बढ़ाने में एक अहम भूमिका निभा रही है। फ़ैमिली व्यवस्था प्रेरित हो रही है, प्रत्येक अपने मोबाईल फ़ोन पर व्यस्त रहता है।

कीनिया की एम्बेसी से इकानामिक कौंसिलर भी आए हुए थे। उन्होंने अपना परिचय करवाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ ने उनका धन्यवाद किया।

(शेष.....)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 14 March 2019 Issue No. 11

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 9/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा अमरीका, अक्टूबर 2018 ई.

20 अक्तूबर 2018 (शनिवार का दिन)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ सुबह 6:15 पर पधारे, मस्जिद बैतुल आफ़ियत फिलाडेल्फिया में नमाज़ पढ़ाई, नमाज़ पढ़ाने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने घर के लिए प्रस्थान कर गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने दफ़्तरी डाक तथा रिपोर्ट्स देखीं और दफ़्तरी मामलों को करने में व्यस्त रहे। प्रोग्राम के अनुसार 10 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के मरदाना हाल में पधारे। मस्जिद के दरवाज़े पर केनेडा से आने वाले दो बच्चे फ़रान तारिक़ और सबीका तारिक़ खड़े थे। यह दोनों बहन-भाई हैं। इन्होने कहा कि हम दोनों कुरआने करीम हिफ्ज़ कर रहे हैं। हुज़ूर अनवर के पूछने पर लड़के ने बताया कि वह साढ़े सात पारे हिफ्ज़ कर चुका है और बच्ची ने बताया कि वह अभी दूसरा पारा हिफ्ज़ कर रही है। दोनों ने हुज़ूर अनवर से प्यार प्राप्त किया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर मस्जिद के अन्दर आ गए जहाँ मज्लिसे आमला जमाअत फिलाडेल्फिया के मेम्बरों ने हुज़ूर के साथ ग्रुप फोटो बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस अवसर पर मक़ामी जमाअत के कुछ बुज़ुर्ग अफ्रीकन अमरीकन लोगों ने हुज़ूर अनवर से भेंट का सौभाग्य प्राप्त किया। जब हुज़ूर अनवर मस्जिद के दरवाज़े से बाहर आने लगे तो एक युवक अपने छोटे बेटे को उठाए हुए खड़ा था। हुज़ूर अनवर ने दयापूर्वक बच्चे को प्यार किया और उसके गाल पर अलैसल्लाहू बेकाफ़िन अब्दुहू वाली अंगूठी लगाई। इस पर वह भाग्यशाली युवक ख़ुशी से फूला न समाता था। इसके पश्चात् हुज़ूर अनवर मस्जिद के बाहर वाले भाग में आ गए जहाँ जमाअत के लोगों स्त्रीयों तथा पुरुषों की एक बड़ी संख्या थी। बच्चियां ग्रुप के रूप में दुआओं वाली नज़्में तथा गीत पढ़ रही थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी भाग में दो पौधे लगाए। इसके पश्चात् हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधार गए।

अमरीका के प्रथम अहमदी का वर्णन

आज फिलाडेल्फिया से बाल्टीमूर जाना था और वहां पर मस्जिद बैतुल समद के उद्घाटन के पश्चात् वाशिंगटन जाने का प्रोग्राम था। जाने से पहले अमरीका के पहले अहमदी Dr.Anthony George Baker की क़ब्र पर दुआ का प्रोग्राम भी था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मौसूफ़ का वर्णन अपने ख़ुतबा जुमा 19 अक्तूबर 2018 में फ़रमाया था। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुस्तक ब्राहीने अहमदिया भाग पंचम में Anthony George Baker का वर्णन इन शब्दों में किया है

"अख़बार अलफ़ज़ल 22 जुलाई 1920 ई० में हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिबरज़ि० की अमरीका से भिजवाई हुई निम्नलिखित रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिस में आपरज़ि० ने फिलाडेल्फिया के डाक्टर बेकर के इस्लाम स्वीकार करने का वर्णन किया है।

" विनीत लेखक को इन थोड़े से दिनों में जो अमरीका देश में प्रवेश किए हुए गुज़रे हैं, बावजूद बड़ी कठिनाइयों और रुकावटों के जो नफ़रत करने वाले ईसाइयों की ओर से आईं अधिकतर सफ़लता प्राप्त हुई। फ़लहम्दोलिल्लाह अला ज़ालिक। इस समय 29 नए युवक तथा स्त्रियाँ विनीत की तबलीग़ से इस धर्म में सम्मिलित हो चुके हैं जिनके नाम नए इस्लामी नामों के साथ निम्नलिखित हैं।

1-2. डाक्टर जार्ज बेकर तथा श्रीमान एंडरसन। यह दोनों साहिब काफ़ी समय से विनित के साथ पत्राचार रखते थे और बहुत समय पहले से मुसलमान हो चुके हैं। मुख़लिस मुसलमान हैं। मैं आवश्यक समझता हूँ कि इनका नाम इस सूची में सर्वोपरी रखा जाए। बाद में आपरज़ि ने बाक़ी लोगों का वर्णन किया।

डाक्टर बेकर की मृत्यु 1918 ई० में हुई। मक़ामी जमाअत ने संबंधित दफ्तरों से संम्पर्क करके तथा सौ साल का पुराना रिकॉर्ड देख कर उनकी क़ब्र तलाश की हैं। मौसूफ़ फिलाडेल्फिया के एक क़ब्रिस्तान Laural Hill में दफ़न हैं।

हुज़ूर अनवर का फिलाडेल्फिया से प्रस्थान और जार्ज बेकर साहिब की क़ब्र पर दुआ

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ 11:20 पर अपने निवास स्थान से बाहर पधारे। हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए जमाअत के लोग स्त्रियों तथा पुरुषों की एक बड़ी संख्या सुबह से मस्जिद बैतुल आफ़ियत के बाहरी भाग में एकत्र थीं। बच्चियां ग्रुप्स के रूप में अलविदाई नज़्में पढ़ रही थीं। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा तथा यहां से रवानगी हुई। पुलिस की गाड़ियां काफ़िले को एस्कॉर्ट कर रही थीं। 11:35 पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ क़ब्रिस्तान में गए तथा मरहूम डॉक्टर जॉर्ज बेकर की कब्र पर दुआ की और इस अवसर पर सदर साहब जमाअत फिलाडेल्फिया मुकर्रम मुजिबुल्लाह चौधरी साहब से कहा कि आपने मरहूम की कब्र किस प्रकार तलाश की है। इस पर मौसूफ़ ने बताया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक में जहां इनका वर्णन फ़रमाया है वहां इनके घर का पूर्ण पता भी लिखा हुआ है। अत: इस पते की बदौलत जो यहां निकट क़ब्रिस्तान है वहां के प्रबंधक तथा काउंसल इत्यादि से संपर्क करके 100 वर्ष पुराना रिकॉर्ड निकलवा कर यह क़ब्र तलाश की गई है। मरहूम डॉक्टर जॉर्ज बेकर साहब के विचार में भी यह नहीं होगा कि जिस मसीह अलैहिस्सलाम की उन्होंने पुष्टि की है और उसे स्वीकार किया कभी उनके कोई ख़लीफ़ा 100 वर्ष पश्चात इनकी क़ब्र पर आएंगे और इनके लिए दुआ होगी। व्ज़ालिका फ़ज़लुल्लाहे यूतीहे मन्यशाओ। इसके पश्चात यहां से प्रस्थान हुआ। शहर से बाहर जाने के लिए वह मार्ग अपनाया गया था जो समुंदरी तट के उस भाग से गुज़रता था जहां पानी के जहाज़ लंगर डाले हुए होते हैं और 1920 ई० में हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ि० के जहाज़ ने इसी पोर्ट पर लंगर डाला हुआ था। जहां आप रज़ि० को जहाज़ से उतरने के पश्चात क़ैद कर लिया गया था। यहां कुछ देर के लिए रुके। प्रबंधक ने बताया कि यह वह स्थान है जहां हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ि० को क़ैद किया गया था। इसके पश्चात पुलिस के एस्कॉर्ट में बाल्टीमूर की ओर यात्रा जारी रही। पेंसिलवेनिया प्रांत की सीमा में यहां की पुलिस ने एस्कॉर्ट किया। इसके पश्चात जब डेलावेयर प्रांत में प्रवेश किया तो वहां की पुलिस ने काफ़िले को एस्कार्ट किया। फिर मैरीलैंड प्रांत में प्रवेश किया तो यहां की पुलिस ने काफ़िले को एस्कॉर्ट किया। बाल्टीमूर मैरीलैंड प्रांत में है। मैरीलैंड प्रांत में जब बाल्टीमूर शहर के निकट पहुंचे तो पुलिस का एक हेलीकॉप्टर भी सिक्योरिटी की ड्यूटी पर था और लगातार काफ़िले के ऊपर और मस्जिद के क्षेत्र में चक्कर लगाता रहा।

शेष पृष्ठ 09 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad